वाप्कोस दर्पण

गृह पत्रिका

संयुक्तांक 91-92

1200 मे.वाट तीस्ता III
हाइड्रो इलैक्ट्रिक परियोजना, सिक्किम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
गुरुग्राम की बैठक प्रगति पर

ग्रामीण जल आपूर्ति के संवर्धन हेतु
हैंड पम्पों की आपूर्ति व संस्थापन, कंबोडिया

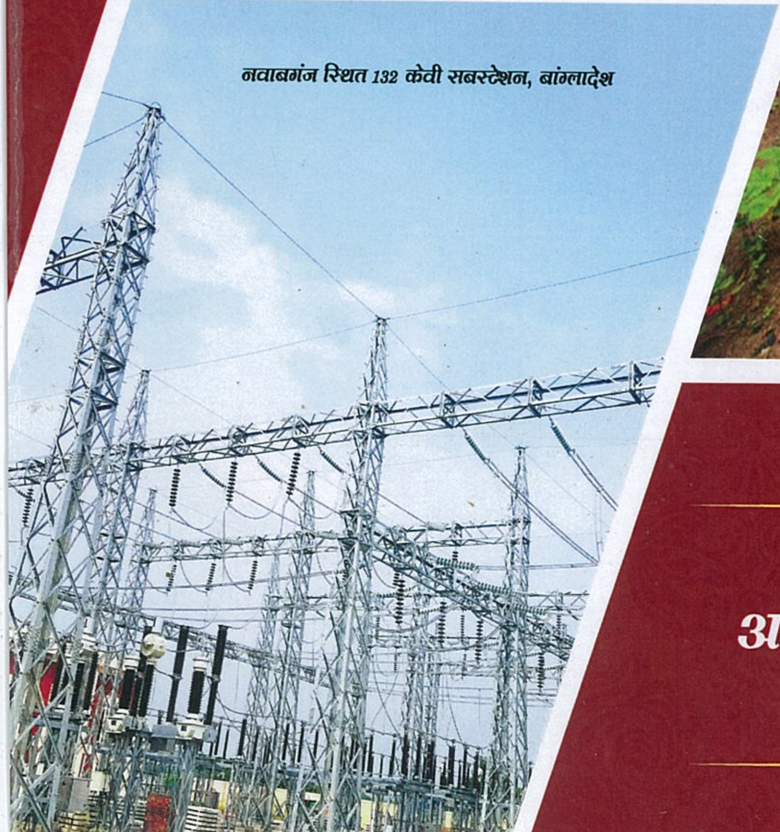

नवाबगंज स्थित 132 केवी सबस्टेशन, बांग्लादेश

अक्टूबर 2018 से मार्च 2019

वाप्कोस लिमिटेड व डोप्पलमायर के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

माननीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल जी, श्री आर.के. गुप्ता, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड को राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु "राजभाषा वैजयंती पुरस्कार-2016-17" के अन्तर्गत द्वितीय पुरस्कार स्वरूप कप एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए।

वाप्कोस दर्पण

अक्टूबर, 2018 से मार्च, 2019 संयुक्तांक 91-92

	इस अंक में	पृष्ठ सं0
	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
	संबोधन - निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	2
संरक्षक	सम्पादकीय - प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	3
आर.के.गुप्ता	राजभाषा गतिविधियां	4
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुडगांव की बैठक	7
	गीत - वन्दे मातरम्	8
तकनीकी संपादन सलाहकार	जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा 'राजभाषा वैजयंती पुरस्कार-2016-17'	9
अमिताभ त्रिपाठी कार्यकारी निदेशक	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के चेन्नई कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण	10
संपादन मण्डल	कहानी - समय का मोल	13
अनुपम मिश्रा निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास **डा. डा. आर.पी.दूबे**	संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास, गुडगांव के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम	14
वरि.कार्यकारी निदेशक	लेख - समय की अहमियत	18
अमिताभ त्रिपाठी कार्यकारी निदेशक	नराकास, गुडगांव के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा 'लघु चित्र कहानी' प्रतियोगिता का आयोजन	19
	कविता – बदलता समाज	20
संपादक	नराकास, चेन्नई के तत्वावधान में छमाही बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह	21
निम्मी भट्ट,	लेख - जल प्रबंधन प्रणाली	23
प्रमुख (रा.भा.का.)	कविता - अंदाज-ऐ-शायन	25
	लेख - पुस्तक पढने की कला	26
	अशिमा चटर्जी - विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक महिलाएं	29
उप संपादक	कविता - क्यों है तू मायूस	31
डी.के.सेठी	लेख - राष्ट्र के विकास में राजभाषा हिन्दी की महत्वता	32
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)	राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली	34
	कविता - उड़ान	38
	कविता - आंखे	39
	कहानी - जमीन-आसमान	41
	लेख - पानी के बचत हेतु प्रभावी कृषि विधियां	45

	इस अंक में	पृष्ठ सं0
सहयोग गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक शारदा रानी, वरि.सहायक (पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।) **केवल आन्तरिक वितरण हेतु**	राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जांच बिन्दु	52
	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उ0क्षे0-I व उ0क्षे0-II का एक दिवसीस 'राजभाषा एवं पुरस्कार वितरण समारोह'	53
	कविता - मेरा भारत महान	54
	लेख - दूसरों की पसंद से जीने के लिए बहुत छोटी है जिन्दगी	55
	कहानी – बाबू की हंसी	56
	कविता - पानी	59
	लेख – विश्व हिन्दी सम्मेलन	60
	लेख - झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता	64
	एक अनुभव - आर्ट ऑफ लिविंग अर्थात जीने की कला	65
	कविता - थोड़ा मैं भी उड़ना चाहता हूं	68
	कहानी - साधु बाबा की सीख	69
	लेख - मसालों के इन फायदों के बारे में जानते हैं आप	70
	हास्य कविता - गलत अंग्रेजी	74
	लेख - भूलना अर्थात मेमरी लॉस	75
	कहानी - हार की जीत	77
	आइए अपना ज्ञान परखें	81
	सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन	84
	आपके पत्र	86

"यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो मछली से सीखो जो स्वदेश (पानी) के लिये तड़प तड़प कर जान दे देती है।"

- सुभाषचंद्र बोस

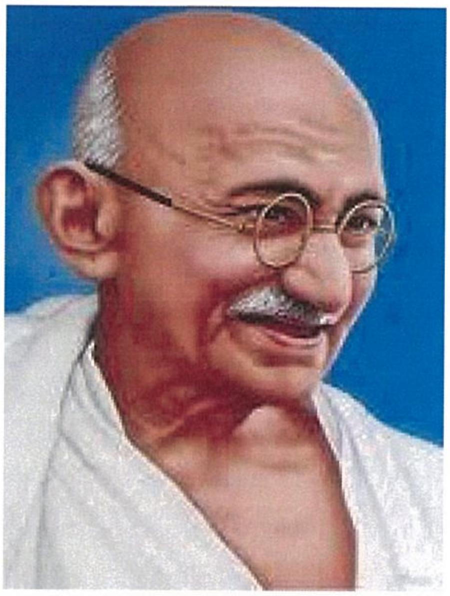

जिस प्रकार हमें अपने शरीर के लिए आहार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मा के लिए प्रार्थनारूपी आहार की जरूरत है, क्योंकि हम यह जानते हैं और इस बात को स्वीकार करते हैं कि शरीर से परे भी कोई चीज है। यदि आप कुछ समय तक ईमानदारी से प्रार्थना करके देखेंगे, तो मेरी ही तरह आपको भी लगने लगेगा कि शारीरिक आहार के बिना तो आप कुछ समय तक अपना काम चला सकते हो - बल्कि एक सीमा तक उससे आपको लाभ भी पहुंच सकता है - लेकिन आध्यात्मिक आहार के बिना रह पाना आपको स्वीकार्य नहीं होगा।

- सम्पूर्ण गांधी वाड़्मय (खण्ड 64), पृ0 347

"आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रांतीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बनकर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाशभूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे"।

- **विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

वाप्कोस

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

वाप्कोस गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आपसी संवाद व सम्पर्क स्थापित करने में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। वाप्कोस में राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है।

जैसाकि हम सभी जानते हैं कि नयापन परिवर्तन में ही छिपा होता है और यही नयापन विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसकी प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास व कड़ी मेहनत करनी होती है। हमें ग्राहकों के साथ परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए समय निर्धारण की वचनबद्धता का कठोरता से पालन करना चाहिए। ईमानदारी व लगनतापूर्वक किया गया कोई भी कार्य सफलता प्रदान करता है। मैं आप सभी को विशेष रूप से यह याद दिलाना चाहता हूं कि उत्तम लाभ व ग्राहकों को अधिकतम संतुष्टि प्रदान करने के निमित्त हमारा विशेष प्रयास गुणवत्ता व समय से काम पूरा करने पर होना चाहिए। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि "ईश्वर उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं"।

वर्ष 2019 अपने आगमन की दस्तक दे रहा है। हमें आने वाले इस वर्ष में कम्पनी की व्यवसायिक गतिविधियों के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सतत् नए संकल्प और लक्ष्य निर्धारित करने होंगे जिन्हें प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना हमें नई स्फूर्ति तथा विश्वास के साथ करना होगा। मुझे विश्वास है कि हम इन्हें प्राप्त करने में सफल होंगे।

नववर्ष 2019 की हार्दिक शुभकामनाएं।

आर.के.गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

संबोधन

गृह पत्रिका हमारे कार्यालय की गतिविधियों का दर्पण होती हैं जिसके माध्यम से कार्मिक अपने विचार अभिव्यक्त करने के सुनहरे अवसर के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के विकास मार्ग को भी प्रशस्त करते हैं।

हमारा उपक्रम जिस प्रकार अपने कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है उसी प्रकार राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में भी अग्रसर है। राजभाषा नीति की सभी उपेक्षाओं को पूरा करने तथा उपक्रम में राजभाषा हिन्दी के लिए सकारात्मक वातावरण बनाने के प्रति भी हम सजग हैं। कार्यालय के कार्यों में हिन्दी के उपयोग की कई संभावनाएं हैं। यह सर्वविदित है कि भाषा प्रयोग से सशक्त होती है।

यह सुखद अनुभूति का अनुभव रहा कि अति विशिष्ट माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों के सम्मुख अपनी कम्पनी में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रस्तुत करने का मौका मिला। माननीय समिति के अत्यंत महत्वपूर्ण निर्देशों ने वाप्कोस के राजभाषा हिन्दी से संबंधित कार्यों को एक नई दिशा प्रदान की, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे। माननीय समिति द्वारा वाप्कोस में राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्यों की सराहना की गई।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में आप सभी कार्यालय का अपना अधिक से अधिक कार्य और भी अधिक मनोबल के साथ करने में सतत् प्रयास करते रहेंगे।

नववर्ष 2019 की मंगलमय कामनाओं के साथ।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वाणि.व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय

"भाषा" मानव, समाज और देश के संगठन की अंत:शक्ति है। किसी भी भाषा का सम्मान उसके प्रयोग से बढ़ता है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। आज हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का विश्वपटल पर महत्वपूर्ण स्थान है। इसी संदर्भ में मैं आपको बताना चाहती हूं कि राष्ट्रभाषा की प्रचार समिति द्वारा वर्ष 1973 में हिन्दी को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस एवं व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलन की संकल्पना की गई और वर्ष 1975 में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में आयोजित कर इस संकल्पना को मूर्तरूप दिया गया। अभी तक 11 विश्व हिन्दी सम्मेलन विभिन्न देशों में आयोजित किए जा चुके हैं।

ग्यारहवां "विश्व हिन्दी सम्मेलन" 18 अगस्त, 2018 को मॉरिशस में आयोजित किया गया जिसमें अधोहस्ताक्षरी द्वारा भी भाग लिया गया। इस सम्मेलन में माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेशमंत्री, जनरल (सेवानिवृत्त) श्री वी.के. सिंह के अतिरिक्त कई देशों के हिन्दी विद्धान, साहित्यकार, भाषा वैज्ञानिक, पत्रकार एवं विषय विशेषज्ञ भी उपस्थित थे। अपने व्याख्यानों में इन विद्धानों ने हिन्दी के प्रसार के संबंध में कहा कि अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिन्दी भाषा को अपने कामकाज की भाषा बना रही हैं। हिन्दी का प्रवाह एक नदी की तरह है। सोशल मीडिया व प्रौद्योगिकी हमारी शक्ति बन गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी का बहुत विकास हुआ है। मॉरिशस के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अनिरूद्ध जगन्नाथ ने कहा कि मॉरिशस ने आज जो भी प्रगति की है उसमें हिन्दी का बडा योगदान है।

हिन्दी की पत्रिकाएं चंदामामा, बाल भारती, पराग, नंदन आदि बच्चों के लिए तो सरिता, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान व्यस्कों की आकर्षण का केन्द्र रही हैं। आज कई हिन्दी पत्रिकाएं बाजार में उपलब्ध हैं। ऐसे सम्मलेन हिन्दी की प्रगति व उनके उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कई अंग्रेजी चैनल अपने हिन्दी संस्करण खोल रहे हैं। नि:सन्देह ये सब हिन्दी की समृद्धि का ही द्योतक है। अंत में मेरा आप सभी से विनम्र आग्रह है कि विश्वपटल के साथ हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में हम अधिक समर्थित भाव से कार्य करें।

नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ।

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 04.10.2018 को वाप्कोस के चेन्नई कार्यालय का निरीक्षण किया गया।

- गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 19.11.2018 को चण्डीगढ़ में आयोजित किये गए राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में वाप्कोस से प्रमुख (रा.भा.का.) तथा सहायक प्रबन्धक (हिंदी) द्वारा भाग लिया गया।

- दिनांक 28.12.2018 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती वीना सत्यवादी को व्यावयान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियमों/अधिनियमों के बारे मे जानकारी दी और नोटिंग/ड्राफ्टिंग का व्यवहारिक अभ्यास भी करवाया। इस कार्यशाला में 40 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 27.12.2018 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए दिनांक 20.12.2018 को "राजभाषा वैजयंती पुरस्कार - 2016-17 के अन्तर्गत वाप्कोस को "द्वितीय पुरस्कार" स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

- दिनांक 7.12.2018 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुड़गांव के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा दिनांक 7.12.2018 को वाप्कोस लिमिटेड कार्यालय में 'लघु चित्र कहानी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

- दिनांक 09.01.2019 को जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) के नेतृत्व में मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के गुड़गांव कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। उन्होंने वाप्कोस लिमिटेड में हिन्दी में किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

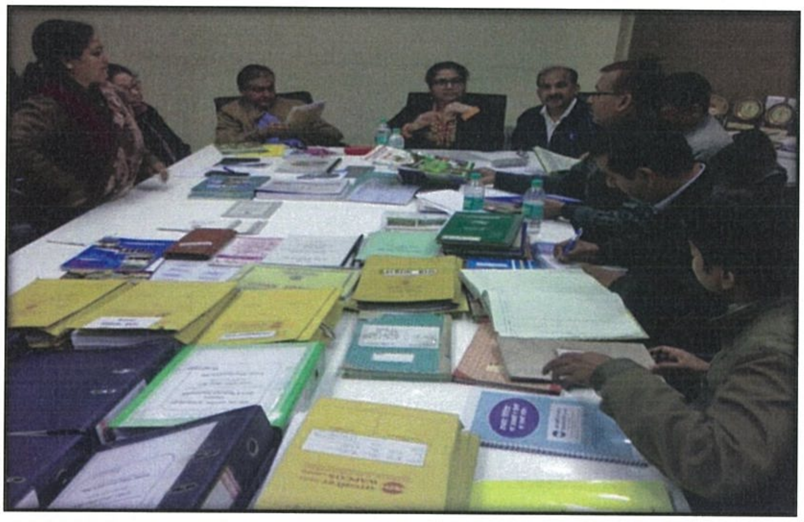

- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास, गुड़गांव के वाप्कोस सहित दस सदस्य कार्यालयों के साथ दिनांक 18.02.2019 को विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किये जाने के संबंध में संबंधित सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ दिनांक 23.01.2019 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस लिमिटेड की अध्यक्षता में एक समन्वय बैठक वाप्कोस लिमिटेड कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें विचार-विमर्श कार्यक्रम से संबंधित समन्वय कार्यों तथा प्रश्नावली भरने के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई।
- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास, गुड़गांव के वाप्कोस सहित दस सदस्य कार्यालयों के साथ दिनांक 18.02.2019 को आयोजित किये जाने वाले विचार-विमर्श कार्यक्रम के संबंध में श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस लिमिटेड की अध्यक्षता में दूसरी समन्वय बैठक संबंधित सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ दिनांक 07.02.2019 को वाप्कोस लिमिटेड कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें उन्हें संबंधित समन्वय कार्यों व प्रश्नावली के संबंध में की गई कार्रवाही की विस्तृत जानकारी दी गई। इसी अनुक्रम में दिनांक 15.2.2019 को तीसरी समन्वय बैठक आयोजित की गई जिसमें इस विचार-विमर्श कार्यक्रम हेतु सभी दस सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ समन्वय कार्यों,

प्रश्नावली तथा अन्य विविध को भली-भांति सम्पन्न करने के लिए एक मोक ड्रिल अभ्यास किया गया।

- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के अध्यक्ष कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड सहित 10 सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों के साथ दिनांक 18.02.2019 को दिल्ली के अशोका होटल में विचार-विमर्श विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। नराकास, गुड़गांव के अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड की ओर से श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास तथा श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुड़गांव ने विचार-विमर्श कार्यक्रम में भाग लिया। इस विमर्श विमर्श कार्यक्रम का समन्वय कार्य भी वाप्कोस को सौंपा गया था।

  विचार-विमर्श कार्यक्रम के दौरान वाप्कोस में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सभी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा समिति सदस्यों द्वारा वाप्कोस में किये जा रहे कार्यों को सन्तोषजनक पाया।

- दिनांक 26.03.2019 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से सेवानिवृत्त उप निदेशक श्री भूपिन्द्र सिंह को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियमों/अधिनियमों के बारे मे जानकारी दी और नोटिंग/ड्राफ्टिंग का व्यवहारिक अभ्यास भी करवाया गया। इस कार्यशाला में 40 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- दिनांक 22.03.2019 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की दिनांक 21.12.2018 को आयोजित बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुड़गांव की वर्ष 2018-19 की दूसरी छमाही बैठक अध्यक्ष, नराकास की अध्यक्षता में दिनांक 21.12.2018 को वाप्कोस लिमिटेड में आयोजित की गई जिसमें गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री एन.एस.मेहरा एवं नराकास, गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे।

बैठक के प्रारम्भ में सदस्य सचिव (नराकास) द्वारा अध्यक्ष, एवं सहायक निदेशक, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। इसके पश्चात अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के सहायक निदेशक तथा सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया। बैठक में उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों तथा अधिकारियों द्वारा अपना परिचय देने के पश्चात अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुड़गांव श्रीमती निम्मी भट्ट द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर चर्चा की गई और बैठक की कार्यवाही विधिवत् रूप से सम्पन्न हुई ।

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

******

वन्दे मातरम्

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी)

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यशामलाम् मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥1॥ वन्दे मातरम्।

सप्त-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥2॥ वन्दे मातरम्।

तुमि विद्या, तुमि धर्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणा: शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे
मातरम्॥3॥ वन्दे मातरम्।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम् सुजलां सुफलाम् मातरम्॥4॥ वन्दे मातरम्।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्॥5॥ वन्दे मातरम्॥

****

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा "राजभाषा वैजयंती पुरस्कार-2016-17

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए दिनांक 20.12.2018 को **"राजभाषा वैजयंती पुरस्कार-2016-17"** के अन्तर्गत वाप्कोस लिमिटेड **को द्वितीय पुरस्कार स्वरूप कप एवं प्रशस्ति पत्र** प्रदान किया गया।। यह पुरस्कार माननीय राज्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल जी ने सचिव, श्री यू.पी.सिंह एवं संयुक्त सचिव (प्रशा.), श्री नीतीश्वर कुमार, जल सं., न.वि. और गं.सं. मंत्रालय की उपस्थिति में श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, वाप्कोस को प्रदान किया। इसके साथ ही माननीय राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल जी द्वारा श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) को भी कार्यालय के राजभाषा प्रभारी के रूप में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

****

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के चेन्नई कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति लोकसभा के बीस एवं राज्यसभा के दस सदस्यों को मिलाकर गठित की जाती है। इस समिति को सुविधा की दृष्टि से तीन उप-समितियों में बांटा गया है। हमारा उपक्रम दूसरी उप समिति के अन्तर्गत आता है।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 04.10.2018 को वाप्कोस के क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति का नेतृत्व माननीय डा0 प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संयोजक महोदय द्वारा किया गया। निरीक्षण में संसदीय समिति के संयोजक महोदय के साथ माननीय सदस्य डॉ. सुनील बलिराम गायकवाड़, सदस्य (लोक सभा), श्री प्रतापराव गणपतराव जाधव, संसद सदस्य (लोक सभा), श्री प्रदीप टम्टा, संसद सदस्य (राज्य सभा) तथा श्री हरनाथ सिंह यादव, संसद सदस्य (राज्य सभा) के अलावा समिति सचिवालय से डॉ. सत्येन्द्र सिंह, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, श्री विकास वर्मा, हिन्दी अधिकारी, श्रीमती नीरजा, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, श्री अब्दुल मोहिब, सहायक भी उपस्थित थे।

निरीक्षण आरम्भ करने से पहले चेन्नई कार्यालय के श्री डी.वी.एस.मूर्ति, परियोजना निदेशक तथा मुख्यालय से उपस्थित श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों व उपस्थित अधिकारियों का पुस्तक व शाल भेंट करके अभिनन्दन किया गया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के अभिनन्दन एवं परिचय की औपचारिकता के उपरांत श्री डी.वी.एस.मूर्ति, परियोजना निदेशक ने वाप्कोस, चेन्नई कार्यालय द्वारा की जा रही विभिन्न परियोजनाओं के संबंध में प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया, जिसकी माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सराहना की गई। तत्पश्चात्, राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी स्थिति का विवरण प्रश्नावली के रूप में उप समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। इस पर समिति के सभी माननीय सदस्यों ने चेन्नै कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के सभी पहलुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति
की दूसरी उपसमिति द्वारा चेन्नै स्थित
कार्यालयों में हिंदी प्रगति का निरीक्षण

इस निरीक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित थे:-

<u>वाप्कोस चेन्नै कार्यालय</u>

1. श्री डी.वी.एस.मूर्ति, परियोजना निदेशक

<u>वाप्कोस, मुख्यालय</u>

1. श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
2. श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)
3. श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.का.)
4. श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिन्दी)

<u>जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय</u>

1. श्री बी.बी.शर्मा, आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी
2. श्री एम.सी.भारद्वाज, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

वाप्कोस द्वारा प्रस्तुत की गई निरीक्षण प्रश्नावली के आधार पर समिति सदस्यों द्वारा चेन्नई कार्यालय में हिन्दी में किये जा रहे कार्यों की सराहना की गई और हिन्दी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के निर्देश दिये गए।

अंत में श्री डी.वी.एस.मूर्ति, पारियोजना निदेशक ने उप समिति के सभी माननीय सदस्यों का राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास हेतु सार्थक विचार-विमर्श के लिए धन्यवाद किया एवं दिये गए दिशानिर्देशों के सम्यक् अनुपालन का आश्वासन दिया।

(गीता शर्मा)
सहा. प्रबन्धक (हिन्दी)

******

पुस्तकें वो साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।

समय का मोल

संकलन - बड़ी-बड़ी खुशियों की छोटी-छोटी बातें
श्री जे.पी.एस.जौली

- समय की बरबादी सबसे महंगा शौक है।
- समय के साथ अक्सर हर इंसान बदल जाता है।
- दिन उसी समय शुरू होता है जब हम जागते हैं।
- भूतकाल की बातें करने वाले कभी महान नहीं होते।
- हमारी सुबह हमें बताती है कि हमारा दिन कैसा होगा।
- स्वभाव को सरल बनाओ तो समय व्यर्थ नहीं जाएगा।
- बेकार गुजारा हुआ समय कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता।
- दुनिया में दो सबसे महान चिकित्सक हैं - परमात्मा और समय।
- भूतकाल भविष्य के साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता।
- समय के अनुसार इस्तेमाल की गई अक्ल को ही समझदारी कहते हैं।
- नौकर घड़ी देखकर काम करता है, जबकि मालिक काम करके घड़ी देखता है।
- वक्त की कीमत उससे पूछों जिसकी पांच मिनट पहले गाड़ी छूट गई हो।
- दुनिया में अभी तक ऐसी घड़ी नहीं बनी जो बीते हुए समय को वापस ला सके।
- जो समय का सही लाभ नहीं उठाते, वही लोग सदा समय की कमी का रोना रोते हैं।
- सुबह जल्दी उठना, समय को बेकार न करना सफलता पाने के सबसे कामयाब गुण हैं।
- अगर आप आज समय को बरबाद करते हो तो कल समय आपको बरबाद कर देगा।
- यदि आप काम के समय काम नहीं करोगे तो फिर आराम के समय आराम नहीं कर पाओगे।
- समय ही जीवन है, समय को बरबाद करना अपना जीवन बरबाद करने के समान है।
- अच्छे फैसले लेते समय यदि देरी कर दी जाए तो फिर ऐसे फैसलों का कोई लाभ नहीं होता।
- यदि भूल से कल का दिन दु:ख में बीता है तो उसे याद कर आज का दिन व्यर्थ मत गंवाइए।

****

मान्नीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गुरूग्राम के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरूग्राम के अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड के अध्यक्ष तथा उनके निम्न सदस्य कार्यालयों के साथ, उनके कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा के संबंध में दिनांक 18 फरवरी 2019 को दिल्ली के अशोक होटल में विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया:

1. वाप्कोस लिमिटेड
2. पावर ग्रिड कारपोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड
3. एल.पी.जी. बाटलिंग प्लाण्ट, इन्डेन बाटलिंग प्लांट,
4. ईसीजीसी
5. दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड,
6. दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी
7. कार्यालय पोस्ट मास्टर जनरल, गुड़गांव
8. वस्तु और सेवा कर
9. कैंद्रीय विद्यालय संगठन
10. राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान (नाइस)

सर्वप्रथम निदेशक (वा. व मा.सं.वि.), वाप्कोस लिमिटेड द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया गया। स्वागत के पश्चात निदेशक (वा. व मा.सं.वि.) ने अपने संक्षिप्त अभिभाषण द्वारा वाप्कोस लिमिटेड के संबंध में जानकारी दी तथा सभी सदस्य

कार्यालयों के प्रमुखों द्वारा अपना अपना संक्षिप्त परिचय दिया गया । इसके उपरांत माननीय समिति सदस्यों के विधिवत् परिचय के साथ ही विचार विमर्श कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

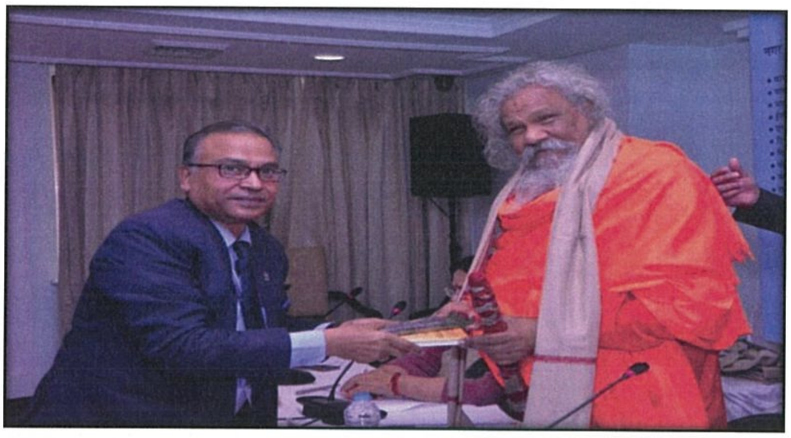

विचार विमर्श कार्यक्रम के दौरान माननीय समिति के उपाध्यक्ष महोदय तथा सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों के साथ निरीक्षण प्रश्नावली की सभी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई ।

चर्चा के दौरान समिति सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को अपने अपने कार्यालयों में निम्नलिखित मदों पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए :

1. सभी कार्यालय प्रमुख नराकास की वर्ष में आयोजित होने वाली छमाही बैठकों में स्वयं उपस्थित रहें। यदि किसी कारणवश कार्यालय प्रमुख बैठक में उपस्थित न हो पाएं तो इसका उपयुक्त कारण बताते हुए अध्यक्ष को पत्र लिखा जाए।
2. नराकास के गठन का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को बढ़ाने के लिए किया गया है इसलिए सभी कार्यालय इसे सक्रिय व उपादेय बनाने में अपना सहयोग दें।
3. नराकास की बैठकों में किसी कार्यालय के प्रमुख के उपस्थित न होने या किसी कार्यालय का प्रतिनिधित्व न होने पर सदस्य सचिव संबंधितों को कारण बताने के लिए पत्र भेजे।
4. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में 'क' क्षेत्र हेतु हिन्दी पत्राचार का लक्ष्य 100% निर्धारित किया गया है। चूंकि गुरूग्राम 'क' क्षेत्र में स्थित है अत: नराकास, गुरूग्राम के सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्य 100% को प्राप्त किया जाए।
5. प्रवीणता प्राप्त सभी कार्मिकों से कार्यालय का शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में कराया जाए तथा जिन कार्यालयों में सभी कार्मिक प्रवीणता प्राप्त नहीं हैं, उन्हें प्रवीणता प्राप्त करवाई जाए और जिन कार्यसाधक कार्मिकों की पदोन्नित हुई है उनको भी प्रवीणता प्राप्त माना जाए और उनसे इस संबंध में घोषणा कराई जाए कि उन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है और कार्यालय का सारा कार्य हिन्दी में करने का निर्देश दिया जाए।
6. परिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की जिम्मेदारी होगी की वह उसे द्विभाषी रूप में जारी करे। चूंकि गुरूग्राम 'क' क्षेत्र में स्थित है, अत: सभी प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाएं।
7. धारा 3(3) का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। इसके उल्लंघन के लिए अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।
8. कार्यालय अध्यक्ष एवं अन्य वरि.अधिकारी स्वयं हिन्दी में काम करें ताकि दूसरों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा मिले।

इस पूरे विचार विमर्श कार्यक्रम का समन्वय कार्य वाप्कोस लिमिटेड को सौंपा गया था। माननीय समिति सदस्यों द्वारा वाप्कोस लिमिटेड को सौंपे गए समन्वय कार्य को विधिवत् रूप से सम्पन्न करने के लिए प्रशंसा की गई।

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

******

बार बार वार

साभार नवभारत टामम्स्

बार बार वार !!
चाहत न थी हमारी की तुझ पर करें वार,
मजबूर इतना किया की हो गऐ हम लाचार,
वैसे तो प्रेम की भाषा है हमारी,
पर चूकेंगे नहीं अगर हो हमारी मातृभूमि पर अत्याचार,
जिरह हमने करी तुझ से बेशुमार,
बापू की अहिंसा की धरती पर न करो हिंसा से प्रहार,
भगतसिंह की भी भूमि है यह करा देंगे याद,
दया भावना ही खोलेगी जन्नत का द्वार,
क्यूं निर्दोष लोगों को मिलती है सजा हर बार
शान्ति की चाहत इधर भी और ऊधर भी
क्यूं चन्द कुर्र दानव रूपी मानव घोले
नफ़रत का ज़हर बार बार हर बार।

*****

समय की अहमियत

प्रकाश बोरीकर
सहायक प्रबंधक

कॉलेज पास करने के बाद, रवि वापस अपने कॉलेज पहुंचा था। रवि अपने कॉलेज का प्रिय छात्र था। उसमें कुछ ऐसी बात थी कि जो भी उससे मिलता वह उसका फैन बन जाता था। जब रवि कॉलेज में घुसा तो उसने देखा सारे गार्ड बदल चुके थे। वह सबसे पहले डीन को मिलने गया, जो पहले सीनियर प्रोफेसर थे। वह रवि को देखकर बहुत खुश हुए। वह बोले, "रवि, तुम बहुत बदले-बदले नज़र आ रहे हो। तुम्हारी सारी ऊर्जा कहाँ गायब हो गई। सब ठीक तो है न?" रवि बोला, "हाँ सर। काम की वजह से फुर्सत ही नहीं मिल पाती की अपने ऊपर पर ध्यान दूँ। कभी-कभी मन होता है सब कुछ छोड़ दूँ। लेकिन मेरे पास विकल्प भी तो नहीं। इसीलिए जो है उसी से काम चला रहा हूँ।" प्रिंसिपल बोले, "रवि, तुमने मेंढक की कहानी सुनी है क्या?" रवि बोला, "नहीं तो। वह क्या है?" सर बोले, "तो फिर कभी ऐसा कर के देखना। किसी कटोरे में थोड़ा पानी भर के, उसमें एक मेंढक डाल देना और पानी को गैस पर उबालने के लिए चढ़ा देना। फिर देखना क्या होता है?" रवि बोला, "सर बताइए न क्या होता है।" सर बोले, "जैसे-जैसे पानी गरम होता है, मेंढक अपने आपको पानी के तापमान के साथ ढालता जाता है। वह अपनी सारी ऊर्जा अपने आपको अपने आसपास के तापमान के बराबर रखने में लगा देता है। फिर जब पानी उबलने लगता है तब उसे गर्मी का आभास होता है और वह कटोरे से कूद कर बाहर निकलने की कोशिश करता है। लेकिन उसकी सारी ऊर्जा तो पहले ही नष्ट हो चुकी होती है। लिहाज़ा वह कोशिश तो करता है लेकिन निकल नहीं पाता। और अंततः उसी कटोरे में मर जाता है।" रवि बोला, "लेकिन इस कहानी से मेरा क्या संबन्ध?" सर बोले, "जब तक समय है, सही निर्णय कर सकते हो। समय बीत गया, तो सही निर्णय करने का भी फायदा नहीं होगा।"

******

कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।

\- थॉमस एडिसन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा "लघु चित्र कहानी" प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरूग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा दिनांक 7 दिसम्बर, 2018 को **"लघु चित्र कहानी प्रतियोगिता"** का आयोजन किया गया जिसमें नराकास गुरूग्राम के सदस्य कार्यालयो से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से श्री पी.के.शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) को आमंत्रित किया गया था। राइट्स लिमिटेड से श्री सुरेन्द्र कुमार, संयुक्त महा प्रबंधक (रा.भा.) भी इस अवसर पर प्रतिभागियों के उत्साहवर्धन हेतु उपस्थित थे ।

इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को दो चित्र दिए गए थे जिसमें से किसी एक चित्र पर उनको एक लघु कहानी (लगभग 300 शब्द) लिखनी थी। प्रतिभागियों ने बहुत ही रूचि के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लिया और अपने विचार एक कहानी के रूप में लिखे। प्रतियोगिता के अंत में सभी प्रतिभागियों को एक-एक पुस्तक स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की गई।

प्रतियोगिता का परिणाम निम्न प्रकार से रहा :

क्रम सं.	प्रतिभागी का नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1.	श्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन	प्रथम 2500/-
2.	श्री कुलदीप सिंह, कार्यालय सहायक	अधीक्षक डाकघर	द्वितीय 2000/-
3.	श्वेताभ त्रिपाठी, अभियंता	वाप्कोस लिमिटेड	तृतीय 1500/-
4.	सौरभ अग्रवाल, वरि. प्रबंधक	इंजिनियर्स इंडिया लिमिटेड	सांत्वना 1000/-
5.	सुश्री मोनिका काद्यान, तकनीकी सहायक	भारतीय खाद्य सुरक्षा संस्थान	सांत्वना 1000/-
6.	श्री गौरव जौहरी, सहायक लेखाकार	राइट्स लिमिटेड	सांत्वना 1000/-

****

बदलता समाज

श्रीमती चंचल सिसोदिया
कनि.सहायक (वित्त)

साहित्य, संगीत, कला, संस्कृति हो गई विलीन।
धर्म, संस्कार छोड़ किस और ये समाज अधीन।।

अहिंसा धर्म के पाठ को अब तो सब जन छोड़ चुके हैं।
झूठे आदर्शों संग कुटिल भाव को बिन डोरी के जोड़ चुके हैं।।

बदलता समाज तेजी से बुराईयों की ओर बदल रहा है।
सोच को त्याग कर इंसान, इंसान को ही नोच रहा है।।

प्रेम अमृत की वाणी को मद मदिरा ले उठा।
सोने की चिड़िया सा भारत भूख गरीबी में जल उठा है।।

साधु-संतों की ये नगरी नास्तिकता में पल रही।
ईश्वर का भय विलोप हुआ, बेईमानी संग चल रही।।

आज नहीं तो कल जायेगा गर्त में ये देश महान।
राष्ट्र संग तब मिट जायेगा भारत देश का नाम।।

जीवन की इस डगर पर कब से दोष दे रहा हूं।
मैं देखूं जब खुद में तो, मैं भी क्या कर रहा हूं।।

मैं जागूंगा सब जागेंगे, मुझ से ही तो है अभिमान।
आज नहीं तो कल कहलाएगा मेरा भारत देश महान।।

साधु-संतो की वाणी संग आगे बढ़ता जायेगा।
फिर से एक दिन देश मेरा सोने की चिड़िया कहलायेगा।।

*****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नई के तत्वाधान में छमाही बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नई के तत्वावधान में दिनांक 5 दिसम्बर 2018 को नराकास की छमाही बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 09 व 10 अगस्त 2018 को आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं और वर्ष 2017-18 के दौरान सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्य हेतु राजभाषा शील्ड पुरस्कार प्रदान किए गए। **वाप्कोस लिमिटेड चेन्नई कार्यालय को वर्ष 2017-18 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्य हेतु छोटे कार्यालयों की श्रेणी में विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विशेष पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रशस्ति पत्र श्री डी.वी.एस.मूर्ति, परियोजना निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड, चेन्नई कार्यालय को प्रदान किया गया**

नराकास, चेन्नई की बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह में वाप्कोस चेन्नई कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी में होने वाले कामकाज, प्रगति और उपलब्धियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसकी उपस्थित अधिकारियों ने सराहना की और प्रदर्शनी के तौर पर लगाई गई सामग्री को काफी उपयोगी बताया ।

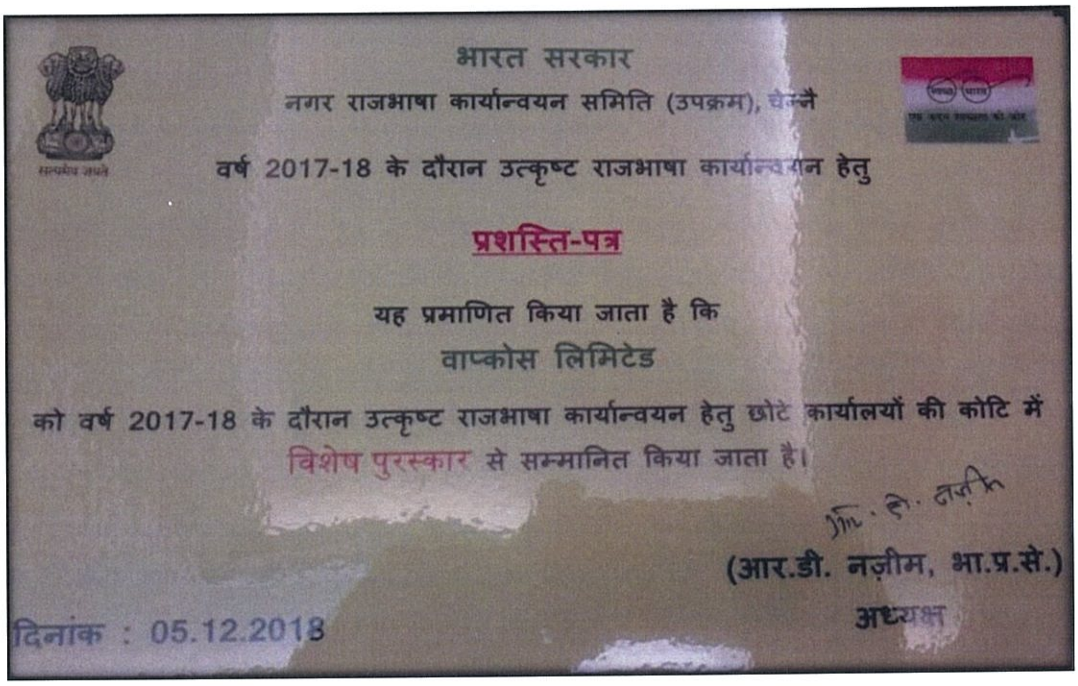

अपने कार्यालय में भी उसी प्रकार की सामग्री तैयार करने हेतु सहायता के तौर पर कुछ अधिकारियों के अनुरोध पर 'वाप्कोस की लघु हिन्दी सहायिका, मानक मसौदे' आदि की एक-एक प्रति उन्हें दी गई ।

गीता शर्मा

सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

****

विद्वानों व मनीषियों की हिन्दी अवधारणायें

सुनो ए हिन्द के बच्चों तुम्हारी है जुबां हिन्दी
तुम्हारा हो यही नारा, हमारी है जुबां हिन्दी
पढो हिन्दी लिखो हिन्दी करो सब काम हिन्दी में
भरी आला ख्यालों से तुम्हारी महरवां हिन्दी
हजारों लफ्ज आयेंगे नये आ जायें क्या डर है
पचा लेगी उन्हें हिन्दी, कि हा जिंदा जुबां हिन्दी।

जल प्रबंधन प्रणाली

राजेश कुमार
अभियंता, भोपाल कार्यालय

जल प्रबंधन हर पीढी के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता होनी चाहिए और पूरे विश्व में हर सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पूरी दुनिया में हर व्यक्ति को जो स्वच्छ पानी की दैनिक आवश्कता होती है जिसे वह पीने एवं कृषि के लिए उपयोग कर सकते हैं। विश्व में बढ़ती जल संकट समस्या को देखते हुए विश्व भर के वैज्ञानिक इस सोच में पड गए हैं कि कैसे जल प्रबंधन की इस समस्या का समाधान हो। कही न कहीं भारत में भी जल संकट का प्रभाव दिखाई पडता है। प्राकृतिक संसाधनों के विवेकहीन उपयोग से पहले ही भू-जल का स्तर घट गया है। भारत में दुनिया की 17 फीसदी आबादी रहती है पर यहां ताजे पानी के सिर्फ 4 फीसदी स्रोत हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार भारत में कुल 14.2 करोड़ हेक्टेयर जमीन पर कृषि होती है, इसमें 52 फीसदी हिस्सा अनियमित सिंचाई और बारिश पर निर्भर करता है। इसी अवधि में खाद्यान्न उत्पादन 26.56 करोड़ मैट्रिक टन से बढकर 31.28 करोड़ मैट्रिक टन हो गया है। अभी सिंचाई के लिए तय पानी में 60 फीसदी जल मार्गों में बेकार बह जाता हैं या वाष्पीकरण में बरबाद हो जाता है। फिलहाल नदियों के जल ग्रहण क्षेत्र बढाने और नदियों को आपस में जोडने से दीर्धावधि समाधान के रूप में देखा जा सकता हैं। किन्तु नदियों को जोडने से पहले संबंधित राज्यों के बीच जल बॅटवारों के मुद्‌दे सुलझाना सबसे अहम है। नदियों को जोड़ने से कई फायदे होंगे, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदायें काफी हद तक कम होंगी तथा सिंचाई प्रबंधन क्षेत्र बढ़ जाऐगा। भू-जल प्रबंधन घटते जल-स्तर का हल माना जा रहा है, सिंचाई का अल्प अवधि समाधान होगा। अभी 60 फीसदी सिंचाई इसी जल से होती है। भू-जल इन्फ्रास्ट्रक्चर के एक प्रणाली में विकास से भी भू-जल पर दवाब घट सकता है। पानी का ऊर्जा आधारित वियमन जैसे सप्लाई में घटाबढी औपचारिक-अनौपचारिक जल, बाजार में पानी बचाने वाली टेक्नोलॉजी का उपयोग जैसे- ड्रिप व स्प्रिंक्लर और यूजर प्रथा समुदाय आधारित संगठन से सारी रणनीतियां परिदृश्य के अनुसार ही काम में लाई जा सकती हैं। जहां भू-जल का ज्यादा इस्तेमाल वहां ऊर्जा का नियमन का काम हो सकता है। पानी बचाने वाली टेक्नोलॉजी जल भण्डार की उपलब्धता और पम्पिंग क्षमता पर निर्भर है। वाटर यूजर समूह नहर तथा भू-जल दोनों क्षेत्रों में बनाये जाते हैं, लेकिन अंतिम उपभोक्ता को पानी के उपयोग में अनुशासित करना और भी बढी चुनौती है। एक व्यक्ति को 15-20 लीटर व परिवार को 200-500 लीटर जल लगता है जबकि एक किलो अनाज उगाने में 2000-5000 लीटर पानी का वाष्पन होता है। चैन्नई में सरकार के प्रयास से समुद्र के जल को विलवणीकरण संयंत्र से पीने योग्य पानी

बनाया जाता है। मध्य प्रदेश में वाप्कोस लिमिटेड अमृत योजना के अंतर्गत 17 शहरों का योजना व विकास प्रबंधन कर रही है, जिसमें इस योजना के अंतर्गत सबसे पहले सिहोर जिले का शुभारंभ माननीय प्रधान मंत्री महोदय के कर कमलों द्वारा किया गया। जिसमें वाप्कोस लिमिटेड द्वारा एस.बी.आर. तकनीक से विकसित 2.6 **MLD** सीवेज प्लांट का बेहतर जल प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जिसका प्रयोग मछली पालन एवं गार्डन सिचांई में होता हैं। वाप्कोस लिमिटेड ग्रामीण समूह जल प्रदाय योजना में भी जल प्रबंधन और भी बेहतर कर रहा है।

****

जीवन किरण
(एक बेहतर कल)

अशोक कुमार तिवारी
भोपाल कार्यालय

नव जीवन किरण का रथ सजा है ।
कली कुसुम से पथ सजा है ।
नव जीवन किरण का रथ सजा है ।
बदरी रूप से अनुचरों ने स्वर्ण सी पोषाक छरी ।
आ रही है, नव कीर्ती की सवारी
नव पल्लव में, नव जीवन भी महक रहा है ।
जीवन उत्सव गा रहा है, नव पुष्प महक रहा है ।
नव किरण का रथ सजा रहा है ।
चाहती हूं, ऊंचाई का ग्रह संग्रह ।
पर कुछ ठिठकता है, अनुभन्द ग्रह
चाहता उछलू - जब तब ग्रह कह
पर कुछ ठिठकता है, स्वाभीमान सहग्रह
कुछ समय में रात का राजा खड़ा,
नव जीवन किरण का रथ सजा है ।

****

अंदाज़-ऐ-शायर (कर्म पूर्ण भाव)

कु. अंकुर तिवारी
वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल कार्यालय

काफीर अक्से अंदाज़, मेरे राज को राज नहीं रहने देता;
गर्दिसा में भी; असकों को नहीं बहने देता।
तर्वित हीं कुछ ऐसी है; मेरे बालदीयान की शायर?
जो अपने दुश्मन से भी नफरत नहीं करने देता।
मेरा अक्से अंदाज़; मेरे राज को राज नहीं रहने देता
अक्सर ही छुपाती हूं; अन्दाजे शायर;
शहर ऐं – भोपाल से सुना है; मैंने
यह शहर –शायर को शहर में नहीं रहने देता।
जान ले लेता है, और ....
आखरी ख्वाईश भी नहीं कहने देता।
अलफाज़ भी कुछ बयाँ नहीं होने देता।
काफीर अक्से अंदाज़, मेरे राज को राज नहीं रहने देता।
अक्सर तर्वित छुपी – छुपी भी नहीं रहने देता।
काफीर अक्से अंदाज़, मेरे राज को राज नहीं रहने देता

****

आइए अपना ज्ञान परखें

भारतीय संस्कृति प्रश्नोत्तरी की उत्तर-सूची

1. (ख) कल्पसूत्र
2. (ग) शुल्बसूत्र
3. (ग) दशरूपकम्
4. (घ) चंडीशतक
5. (ख) सौन्दर्यलहरी
6. (ख) विष्णु शर्मा
7. (ख) नारायण पंडित
8. (क) विशाखदत्त
9. (ख) भवभूति
10. (ग) प्रसन्नराघव
11. (घ) वाग्भट्ट
12. (ग) भाव मिश्र
13. (क) भास
14. (ख) सारंगदेव
15. (ग) सोमनाथ
16. (क) अनुष्टुप्
17. (घ) गोविंद दीक्षित
18. (ग) आनंद मठ
19. (ख) पंजाबी
20. (ख) पंचसिद्धांतिका
21. (ग) भास्कराचार्य
22. (घ) ब्रह्मगुपत
23. (ख) आर्यभटीय
24. (ग) गणित
25. (घ) सोमदेव

पुस्तक पढ़ने की कला

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

गीता में कहा गया है कि ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है। ज्ञान प्राप्ति के मुख्यत: दो मार्ग हैं - सत्संगति और स्वाध्याय। यदि भगवान की कृपा होगी तो व्यक्ति को सत्संगति मिलेगी परन्तु पुस्तकें तो सर्वत्र सहजता से उपलब्ध हो जाती हैं। ज्ञान का महत्वपूर्ण स्रोत है पुस्तकें। आज हमें संसार की नवीनतम पुस्तकों के साथ-साथ प्राचीनतम पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। मानव के जीवन में पुस्तकें मित्र और मार्गदर्शक दोनों की भूमिका निभाती हैं। इन्टरनेट, सूचना क्रांति ने ज्ञान के कितने ही मार्ग खोल दिए हों परन्तु पुस्तकों की आवश्यकता अभी भी है। अध्ययन-शिक्षण का अधिकांश व महत्वपूर्ण हिस्सा इन्हीं पर निर्भर करता है। विषय वस्तु को विस्तार से समझने के लिए इनकी सहायता नितांत आवश्यक है। अगर तथ्यों को भली-भांति देखा जाए तो परीक्षा में सफलता की संभावना इन्हीं में टिकी होती है क्योंकि यही तो अध्ययनगत सूचना का **अक्षय** स्रोत है। हमें इस पर भी विचार करना होगा कि हमारे अध्ययन की विधि क्या हो जिससे सफलता की प्राप्ति साकार हो जाए इसके लिए हमें कुछ बिन्दुओं पर विचार करके अपनी दिनचर्या में अपनाना होगा:

– पढ़ने की आदत दिमाग को हमेशा युवा बना कर रखती है।
– पढ़ने की आदत हमारी Vocabulary को Improve करती है।
– पढ़ने की आदत हमारे जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
– पढ़ने की आदत नई-नई चीजें सीखाती है।

पुस्तकों का चयन - सर्वप्रथम पुस्तकों का चयन सही ढ़ंग से करना होगा चाहे वह कक्षा के नियमित अध्ययन से संबंधित हो या प्रतियोगिता परीक्षा से। यह ध्यान रहे कि कक्षा के नियमित अध्ययन की तुलना में प्रतियोगिता परीक्षा की विषयवस्तु काफी बड़ी होती है जिसके लिए हमें पुस्तकों की सहायता लेनी पड़ती है। अत: यह ध्यान में रखते हुए हम उन पुस्तकों का चयन करें जो विषयवस्तु की स्पष्टता से तथा बिन्दुवार एवं अद्यतन सूचनाओं के साथ महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हो।

पढ़ाई करते समय प्राय: हमारे पास समय का अभाव रहता है। कम समय में ज्यादा से ज्यादा पुस्तकें पढ़नी होती है इसलिए हमें उन मदों को भी देखना होता है जिसे हम कम

समय में उपयोगी पुस्तकें पढ़ सकें और उन्हें ज्यादा से ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकें। इसलिए निम्न महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान देना नितांत आवश्यक है:-

<u>एकाग्रता</u> :- हमारा विषय में रूचि होना अत्यावश्यक है तभी हम एकाग्र हो सकेंगे और पुस्तकें पढ़ने में यथोचित ध्यान लगा सकेंगे। अपनी इच्छा से पुस्तक पढ़ें, किसी के दवाब या दिखाने के लिए पढना अनुचित है। इस प्रकार की पढ़ाई हमें कोई लाभ नहीं देगी। हमारा मन एकाग्र होगा तो हम पुस्तक पढ़ कर उसे अच्छी तरह समझ सकते हैं। पढ़ने के लिए अनिवार्य व प्राथमिक शर्त है मन का एकाग्र होना। तभी हम पढ़ने की अन्य प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं।

<u>प्रस्तावना</u> :- किसी भी पुस्तक को सही तरीके से समझने के लिए जरूरी है कि प्रस्तावना को अवश्य पढ़ा जाए। कुछ लोग प्रस्तावना पढ़े बिना ही पुस्तक को पढ़ना शुरू कर देते हैं जिससे वह उसे सही तरीके से समझ नहीं पाते। क्योंकि किसी भी पुस्तक की प्रस्तावना उसकी आत्मा होती है। लेखक इसमें अपना दृष्टिकोण व विषयवस्तु स्पष्ट करता है। उसमें लेखक की अनुभूतियां होती हैं जो हमारे काम आ सकती है। आगे के पाठों में लेखक क्या कहना चाह रहा है उसके बारे में प्रस्तावना से हमे ज्ञात हो जाता है। हम लेखक के व्यक्तिगत विचारधारा व अनुभवों से भी परिचित होते हैं और उसके द्वारा लिखे गए विषय को आसानी से समझ भी जाते हैं।

<u>पढ़ने की गति</u> :- यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आम धारणा यह होती है कि धीरे-धीरे पढ़ने से समझने में आसानी होती है परन्तु मनोवैज्ञानिक शोध के अनुसार हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारे पढ़ने की गति तेज हो। इससे मन को एकाग्र करने में भी सहायता मिलती है। जिस प्रकार धीरे-धीरे गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त होने के लिए साथ-साथ अन्य कार्य भी कर रहा होता है जैसे अपने अन्य कार्यों के बारे में सोचना, गाड़ी से बाहर इधर-उधर देखना, बात करना आदि परन्तु जो थोड़ा तेज गति से गाड़ी चला रहा होता है उसका ध्यान केवल गाड़ी चलाने में होता है वह किसी से बात व अन्य कार्य नहीं करता क्योंकि उसे दुर्घटना का भय होता है। उसका समूचा मन, इंद्रियां एक दिशा में क्रियाशील होती हैं। पुस्तक पढ़ते समय भी हमारी मनस्थिति लगभग ऐसी ही होती है और पढ़ते समय हम इस सच्चाई को परख भी सकते हैं।

<u>विचारों का लेन-देन</u> :- कोई भी पुस्तक पढ़ने के बाद उस संबंध में किसी से भी अवश्य बात करनी चाहिए। उस पुस्तक के बारे में बताएं कि पुस्तक कैसी लगी, कहां-कहां वह रूचिकर थी, कहां कमी थी। पुस्तक की इस प्रकार समीक्षा स्वयं ही न करें बल्कि अपने साथी को भी

प्रेरित करें। अगर दो व्यक्ति एक ही विषय की दो अलग-अलग पुस्तक पढ़ते हैं तो इससे अलग-अलग विषय वस्तु व दृष्टिकोण का भी आदान-प्रदान हो पाएगा जिससे हमें उस पुस्तक के विचार-निर्माण में मदद मिलेगी।

<u>महत्वपूर्ण अंश</u> :- अपने विषय से संबंधित महत्वपूर्ण अंशों को रेखांकित कर लें क्योंकि पुस्तक में लिखी हर पंक्ति उपयोगी नहीं होती। पुन: याद करने के लिए हम उस रेखांकित पंक्तियों को ही पढ़ सकते हैं जिससे केवल उन्हें ही पढ़ने से हमारे दिमाग में पुस्तक का पूरा खाका पुन: याद हो जाता है।

<u>मस्तिष्क चित्रण</u> :- किसी भी विषय या स्थिति के पीछे कोई न कोई कारण होता है और जहां वह कारण होता है वहां परिणाम भी अवश्य होता है। दोनों का आपस में घनिष्ठ संबंध होता है। अत: पुस्तक के विषय को भली भांति पढ़ने व समझने के बाद हमारे मस्तिष्क में विषय का एक स्पष्ट रेखाचित्र बन जाएगा जिसका हम मनचाहा प्रयोग कर सकते हैं। मस्तिष्क में रेखांकित चित्रण इतने अच्छे तरह से हमें याद रहते हैं कि हम उन्हें भूल नहीं पाते और उस विषय में कभी भी पढ़ने पर एक पिक्चर की भांति तुरंत याद आ जाते हैं।

अंत में हमें पुस्तक के प्रत्येक पाठ को पढ़ने व समझने के बाद नोटस् अवश्य बनाने चाहिए। इसमें थोड़ा श्रम व समय अवश्य लगता है पर इससे हमें समझने में आसानी होती है। परीक्षा के अंतिम चरण में इन नोटस् को एक बार आसानी से पुन: पढ़ा जा सकता है जिससे पुस्तक के सभी तथ्यों का स्मरण एक साथ ही हो जाएगा। हमने यदि पढ़ने की उक्त विधि को अपना लिया तो हम कम समय में ज्यादा से ज्यादा पढ़ सकेंगे और जो पढ़ा है, उसे आसानी से ज्यादा से ज्यादा समझ सकेंगे। यदि हमें अच्छी तरह समझ आ जाएगा तो हमें समरण भी अच्छी तरह होगा जिसका प्रभाव हमारी परीक्षा पर पड़ेगा। हम परीक्षा में कम समय में आसानी से लिख सकेंगे। यदि हमने सही पढ़ा और सही समझा तो नि:संदेह हमारे लेखन की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। यह गुणवत्ता हमें अच्छे अंकों व उत्कृष्ट परिणाम के रूप में प्राप्त होगी। पुसतकों को सहजता से पढ़ने व समझने के ये उपाय हर उम्र के व्यक्ति के लिए लाभदायक होंगे।

****

किताब पढ़ना हमें एकांत में विचार करने की सच्ची खुशी देता है।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

आशिमा चटर्जी

(23 सितम्बर 1917 से 22 नवम्बर, 2006)

संकलन : विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक महिलाएं

डी.एस.सी. की उपाधि अर्जित करने वाली प्रथम भारतीय महिला। आशिमा ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1938 में रसायन शास्त्र में एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद वहीं से पी.के.बोस के निर्देशन में डी.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की।

1940 में उन्होंने महिला कॉलिज, कलकत्ता में रसायन विज्ञान के संस्थापक हेड के रूप में कार्य आरंभ किया। 1944 में वह कलकत्ता यूनिवर्सिटी के रसायन विभाग में मानदेयी प्रवक्ता के रूप में कार्यरत रहीं।

1954 में डा0 चटर्जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय के विशुद्ध विज्ञान विभाग में रीडर के रूप में नियुक्त हुईं, जहां वह अंतिम समय तक कार्यरत रहीं। 1962 में वह अति सम्माननीय चेयर, खैरा प्रोफेसर चेयर पर पदासीन हुईं। इस प्रकार पदासीन होने वाली वह प्रथम भारतीय महिला वैज्ञानिक थी। 1972 में यू.जी.सी. से अनुदान प्राप्त एक विशेष प्रोग्राम की को-ऑडनेटर रहीं। यह प्रोग्राम प्राकृतिक उत्पादों की कैमिस्ट्री पर शोध कार्य तथा अध्यापन कार्य को तीव्र गति से आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित था। उनके अनवरत प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय औषधीय पादपों पर शोधकार्य तथा उनसे दवाइयों के निर्माण के लिए एक क्षेत्रीय शोध संस्थान का उनका जीवन भर का सपना पूरा हुआ। वे जीवन पर्यंत इस संस्थान की मानदेयी को-ऑर्डिनेटर बनी रहीं।

उन्होंने मारसीलिया माइनुटा से आयुष-56 नामक एंटी-एंपिलैप्टिक दवा का सफलतापूर्वक निर्माण किया। इसी प्रकार अनेक औषधीन पौधों से मलेरिया निवारण दवाओं का निर्माण किया। इनमें से अनेक पेटेंटेड दवाईयां कई कम्पनियों के माध्यम से बिक रही हैं।

डा0 आशिमा ने औषधीय रसायन में विशेष योगदान दिया है, जिनमें प्रमुख शाखाएं हैं-ऐल्केलसॅयड्स, टरपिनॉइडस, विश्लेषणात्मक रसायन तथा कार्बनिक रसायन। उनके चार सौ से अधिक शोधपत्र अनेक राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हैं।

डा0 आशिमा ने कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित 'भारतीय वनौषधि' के छः वाल्यूमस् का संपादन किया तथा सी.एस.आई.आर.द्वारा प्रकाशित 'द ट्रीटिस ऑफ इंडियन मेडिसिन प्लांट्स' के छः श्रेणियों की प्रमुख संपादक रही हैं।

1960 में वह इंडियन नेशनल साइंस अकेडमी की फैलो चुनी गई। 1961 में उन्हें शान्त स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अन्य सम्मानों के अतिरिक्त 1975 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 1975 में इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन की अध्यक्षा चुनी जाने वाली वह प्रथम महिला वैज्ञानिक थीं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया, जिसे उन्होंने फरवरी 1982 से मई 1990 तक सफलतापूर्वक निभाया।

****

एक सेठजी थे, जो व्यपारी होते हुए भी निर्द्वंद्व स्वभाव के थे। उनके रूई के कई गोदाम थे। एक दिन उनका मुनीम अचानक दौड़ता हुआ उनके कक्ष में पहुंचा और बोला - "सेठजी, बडी बुरी खबर है। तार आया है कि हमारे गोदामों में आग लग गई है, संभवतया लाखों का नुकसान हो गया होगा। अब क्या करें?" सेठजी ने मात्र यह उत्तर दिया कि - "जैसी प्रभु की इच्छा है, वैसा ही होगा।" इतना कहकर वह जो कार्य कर रहे थे, वही करने में संलग्न हो गए। मुनीम को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लाखों के नुकसान की खबर सुनकर भी सेठ अविचलित भाव से अपना कार्य कर रहे हैं।

एक घंटे बाद मुनीम फिर से सेठजी के कमरे में दौड़ता हुआ आया और बोला - "सेठजी अभी खुशखबरी आई है। हमारे गोदाम सुरक्षित है। पहला वाला तार हमें गलती से मिल गया था, वो संभवतया किसी ओर का था।" इस बार भी सेठजी ने वही उत्तर दिया - "जैसी प्रभु की इच्छा होती है, वैसा ही होगा।" मुनीम को समझ में आ गया कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा मानकर उन पर छोड़ देने वाले मन:स्थिति से निर्द्वंद्व रहते हैं और परिस्थितियों से सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि जब रक्षा करने वाला स्वयं भगवान है तो उन्हें कौन क्या कष्ट दे सकेगा।

******

क्यों है तू मायूस!

अरूणेन्द्र सिंह
भोपाल कार्यालय

क्यों है तू मायूस, तुझे किस बात का ग़म है,
रख खुद पर भरोसा, तेरे हौसले भी बुलंद हैं।

जो निकल चुके सफर में, रुकना नहीं तेरा काम,
धूप है अभी तेज़, मगर अगले पल है छाँव।

कोई आएगा, कोई जायेगा, कोई साथ निभायेगा,
तू निरंतर ही चलता रह, तेरा भाग्य भी तेरे सामने झुक जायेगा।

एक शक्ति जो हर दम तेरे साथ है चल रही
तेरी मेहनत से ही उसका आशीर्वाद तुझे मिल जायेगा।

तिनके तिनके सा हौसला, बूंद-बूंद सी मेहनत
रख थोड़ा सा सब्र, तेरा घड़ा भी भर जायेगा।

रखो खुद को अनुशासित और ईर्ष्या से कोसों दूर,
तेरा व्यक्तित्व ही तेरा कारवाँ आगे बढ़ाएगा।

जिसकी है बरसों से चाहत, वो सब तेरा हो जायेगा।,
अगर इरादे हो बुलंद, तो प्यासे के पास चल के पानी भी आएगा।

सोच हो अगर सिर्फ मंज़िल को पाने की,
तो हर वो आँख उस मछली की, हर वो तीर अर्जुन कहलाएगा।

****

"राष्ट्र के विकास में राजभाषा हिन्दी की महत्वता"

कलावती
उप मुख्य अभियंता

जब मैं पंछियों को चहचहाते हुए, सिंहों को दहाड़ते हुए, हाथियों को चिंघाड़ते हुए तथा घोड़ों को हिनहिनाते हुए सुनती हूं तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे आपस में बातें करना चाहते हैं, अपने विचारों को आदान-प्रदान करना चाहते हैं। इस संदर्भ में हमें, मनुष्य जाति को बहुत भाग्यशाली समझना चाहिए कि भाषा द्वारा हम आपस में अपने विचारों को एक दूसरे के साथ बांट सकते हैं।

राष्ट्र की भाषा का प्रमुख उद्देश्य है कि वह सबसे सरल हो, जन सामान्य उसे सरलता से समझ सके, अपना एवं कार्यालय के काम कर सके, अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचा सके – ऐसी ही है हमारी राष्ट्रभाषा "हिन्दी"। स्वामी दयानंद जी के तथ्य इसको स्पष्ट रूप से व्यक्त भी करते हैं – "हिन्दी के द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है"।

हिन्दी भाषा को राजभाषा की मान्यता प्राप्त है। यह भाषा सरल एवं सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी के माध्यम से बहुत ही सरलता से विचारों का आदान-प्रदान किया जा सकता है जोकि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने कहा भी है -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।"

राजभाषा हिन्दी की महत्ता है कि यह पूरे राष्ट्र को एकता के धागे में पिरोती है। राष्ट्र के नागरिकों एवं जन सामान्य के बौद्धिक विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। भाषा के सरल होने के कारण एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करना बहुत ही सरल हो जाता है।

देश में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर भाषा में परिवर्तन ऐसे होता है जैसे जल में परिवर्तन। परन्तु इतनी विविधता होते हुए भी हिन्दी सभी भाषाओं के मूल को अपने में समाये हुए राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोए हुए है। हिन्दी के बारे में यह कहना कदापि गलत न होगा कि - "हिन्दी देश में एकता की द्योतक है।"

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वहां के नागरिक बौद्धिक एवं सामजिक रूप से विकसित हों। हिन्दी भाषा के द्वारा वे आपस में पारस्परिक संबंध बहुत

ही स्नेहपूर्ण ढ़ंग से स्थापित करते हैं। प्रान्तीय भाषा अलग-अलग होते हुए भी वह हिन्दी के माध्यम से विचारों को विनिमय कर सकते हैं जिससे राष्ट्र का सामाजिक स्तर ऊपर उठता है। आज के समय में जहां आतंकवाद और दंगे समय-समय पर होते रहते हैं यदि वे हिन्दी भाषा के मूल को समझे जोकि "समन्वय की भावना" है।

नागरिकों के बौद्धिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि वह अच्छे विचारों को ग्रहण करें और उसमें सोचने समझने की शक्ति हो। अनेक परेशानियों का सामना प्रबलता तथा दृढ़ता से कर सके। पुस्तकें एवं विद्वानों के विचार इस तरफ एक पहल करते हैं। परन्तु यह पहल केवल तभी सफल हो सकती है जब वह जन सामान्य तक पहुंच सके। इसलिए यह आवश्यक है कि यह उनकी निज भाषा में हो तथा वे इसका पूर्णतया लाभ उठा सकें। इन्हीं सब बातों का सार इस वाक्य के द्वारा प्रदर्शित होता है – "राजभाषा हिन्दी की उन्नति ही देश की उन्नति है।"

हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा जन सामान्य के हृदय तक पहुंचा जा सकता है। इसी के द्वारा देश को सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है जब जन सामान्य भी पर्याप्त रूप से सहयोग दे। केवल नारे या सरकारी प्रयास ही काफी नहीं होंगे बल्कि देश के विकास में अपना सहयोग दें। यह सत्य है कि बूंद-बूंद से ही गागर भरता है और यही देश के विकास पर भी लागू होता है। प्रत्येक नागरिक का सहयोग इसी बूंद की तरह है।

राष्ट्र का विकास केवल आर्थिक रूप में ही नहीं बल्कि सामाजिक रूप में भी होना चाहिए। राजभाषा हिन्दी इसी तरफ एक अनूठा योगदान दे रही है। यह केवल वर्तमान में ही नहीं बल्कि यदि इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो यह सिद्ध होता है कि जब देश को आजाद कराने के लिए जो विशाल आन्दोलन चलाया गया था तब इन विचारों को हिन्दी के माध्यम से ही जन सामान्य तक पहुंचाया गया था जिससे वे अपने प्रयासों में सफल हो सके और देश को आजादी प्राप्त हुई।

हिन्दी न केवल, भूतकाल और वर्तमान की सफलता की द्योतक है बल्कि भविष्य में भी इसी तरह जन सामान्य के बीच प्रवाहित रहें और राष्ट्र का विकास होता रहे। अंत में कुछ पंक्तियां विचारों को इस प्रकार व्यक्त करती हैं -

"हमारी राजभाषा हिन्दी, हमारे राष्ट्र की मेरूदण्ड की तरह है जो देश को एक दृढ़ आधार प्रदान करती है । यदि हिन्दी के अस्तित्व पर कोई भी आंच हुई तो वह यथासम्भव ही देश के अस्तित्व पर भी आंच होगी ।"

****

राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न 1 भारतीय संघ की राजभाषा क्या है?

उत्तर देवनागरी में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा।

प्रश्न 2 राजभाषा हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है?

उत्तर देवनागरी लिपि में।

प्रश्न 3 भारतीय संसद में संविधान का भाग सत्रह कब पारित हुआ?

उत्तर 14 सितम्बर, 1949 में।

प्रश्न 4 राजभाषा अधिनियम 1963 कब पारित हुआ?

उत्तर 10 मई, 1963 को।

प्रश्न 5 राजभाषा अधिनियम 1963 कब संशोधित हुआ?

उत्तर 1967 में।

प्रश्न 6 राजभाषा नियमों में वर्गीकृत 3 क्षेत्र क्या हैं?

उत्तर 'क', 'ख' व 'ग' क्षेत्र

प्रश्न 7 भारतीय हिन्दी दिवस कब मनाते हैं?

उत्तर प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को।

प्रश्न 8 अंडमान व निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में स्थित है?

उत्तर ''क'' क्षेत्र में।

प्रश्न 9 'ख' क्षेत्र में कितने प्रदेश व केन्द्र शासित प्रदेश हैं?

उत्तर कुल 06 तीन प्रदेश गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब एवं तीन केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ, दमन व दीव, दादर व नागर हवेली।

प्रश्न 10 'ग' क्षेत्र में कितने प्रदेश व केन्द्र शासित प्रदेश हैं?

उत्तर जम्मू-कश्मीर, असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैण्ड, सिक्किम, गोवा, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक तथा 2 केन्द्र शासित प्रदेश - लक्षद्वीप व पुदुचेरी।

प्रश्न 11 नागालैण्ड व अरूणाचल प्रदेश की राजभाषा क्या है?

उत्तर अंग्रेजी ।

प्रश्न 12 संसदीय राजभाषा समिति का प्रथम गठन कब हुआ?

उत्तर जनवरी 1976

प्रश्न 13 संसदीय राजभाषा समिति में कितने सदस्य होते हैं?

उत्तर 30 सदस्य (20 लोकसभा से तथा 10 राज्यसभा से)

प्रश्न 14 संसदीय राजभाषा समिति में वर्तमान में कितनी उप समितियां है?

उत्तर 03 उप समितियां हैं।

प्रश्न 15 विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति का मुख्य कर्तव्य क्या है?

उत्तर किसी कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा एवं कार्यान्वयन हेतु कार्यवाही ।

प्रश्न 16 T.O.L.I.C. की बैठकों की अवधि क्या होती है?

उत्तर 6 माह में एक बार ।

प्रश्न 17 राजभाषा कार्यक्रम कौन तैयार करता है?

उत्तर गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग।

प्रश्न 18 हिन्दीतर भाषी निवासियों को दिए गए आश्वासनों को विधिक रूप देने के लिए कौन सा नियम पारित किया जाता है?

उत्तर राजभाषा अधिनियम 1963 (यथासंशोधित 1967)

प्रश्न 19 राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब से लागू की गई?

उत्तर 26 जनवरी, 1965 से ।

प्रश्न 20 राजभाषा अधिनियम की धारा 4 किससे संबंधित है?

उत्तर संसदीय राजभाषा समिति के गठन से।

प्रश्न 21 संविधान की धारा 343 -351 किस भाग में है?

उत्तर भाग सत्रह में।

प्रश्न 22 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 7 क्या है?

उत्तर उच्च न्यायालयों के निर्णयों में हिन्दी या अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का विकल्प।

प्रश्न 23 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 6 क्या है?

उत्तर राज्यों के उच्च न्यायालयों के मामलों में राज्यपाल की अनुमति से अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषा का प्रयोग।

प्रश्न 24 क्या राजभाषा नियम 1976 का विस्तार सम्पूर्ण भारत पर है?

उत्तर इसका विस्तार तमिलनाडु को छोड़कर पूरे भारत पर है।

प्रश्न 25 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 6 व 7 किस राज्य पर लागू नहीं है?

उत्तर जम्मू और कश्मीर पर।

प्रश्न 26 राजभाषा संकल्प 1968 किन सदनों में पारित हुआ?

उत्तर लोकसभा और राज्यसभा

प्रश्न 27 साइन बोर्ड में तीन भाषाओं को लिखने का क्या क्रम है?

उत्तर सबसे पहले क्षेत्रीय भाषा, इसके बाद हिन्दी तथा अंत में अंग्रेजी भाषा।

प्रश्न 28 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात भारत की प्रमुख भाषाएं कौन-कौन सी हैं?

उत्तर 1. हिन्दी, 2. संस्कृत, 3. उर्दू

प्रश्न 29 धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी जारी किए जाने वाले दस्तावेज कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. संकल्प, 2. साधारण आदेश, 3. नियम, 4. अधिसूचनाएं, 5. प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन, 6. प्रेस विज्ञप्ति, 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष प्रस्तुत व अन्य प्रतिवेदन, 8. राजकीय दस्तावेज, 9. संविदाएं, 10. करार, 11. लाइसेंस, 12. अनुज्ञापन, 13. टेण्डर के लिए नोटिस तथा 14. निविदा प्रारूप।

प्रश्न 30 भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत भाग पांच में राजभाषा नीति संबंधी प्रावधान है?

उत्तर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 120 में।

प्रश्न 31 भारतीय संविधान के किन-किन अनुच्छेदों में आठवीं अनुसूची के प्रावधान का उल्लेख है?

उत्तर धारा 344(1) व 351 में।

प्रश्न 32 राजभाषा अधिनियम कब व क्यों पारित किया गया?

उत्तर 1963 में, वर्ष 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में हिन्दी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रखने के बावत्।

प्रश्न 33 भारतीय संविधान के भाग 17 में कितने अनुच्छेद हैं?

उत्तर 09 अनुच्छेद हैं - 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351

प्रश्न 34 भारतीय संविधान की धारा 344 के तहत राजभाषा आयोग कब बना?

उत्तर वर्ष 1955 में, बी.जी.खैर आयोग।

प्रश्न 35 राजभाषा आयोग की सिफारिश पर बनी संसद समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर जी.वी.पंत ।

******

उड़ान

कुमारी विशाखा घई
सुपुत्री श्रीमती आशा घई,
जन सम्पर्क अधिकारी

एक ही जिन्दगी मिली है, तू कुछ बड़ा काम कर।
इस वतन की ऊंचाईयों को अपने नाम कर
यह दुख की तार, मेहनत से कर जा पार
न मान यूं ही हार, न मान यूं ही हार।

इस रास्ते पर ना जाने के बहाने मिलेंगे हजार,
पर न मान कभी हार, अपनी तकदीर तू खुद ही लिख डाल
सबको बता अपने हौंसलों का हाल,
अपने सपनों के वास्ते तू डट खड़ा हो
मुश्किल वक्त टलेगा, चाहे कितना भी बड़ा हो।

भूत और भविष्य मत पड़ इन कालों में,
तू भी नहीं जानता तेरी जिन्दगी कितनी पड़ी है सालों में,
हौसलों की छलांग तू लगा, इस समन्दर की गहराईयां माप जा,
वक्त तकदीर एक दिन सब झुकेंगे,
सुख के दिन गले लगाएंगे।

हर तरफ जो तेरा ही नाम होगा,
सदियों तक जिंदा जो तेरा काम होगा,
तू बिस्तर से छलांग लगाकर दुनियां को आजमा,
इसे अपनी मुट्ठी में कर जा।
ऐसा नहीं जो तू पा नहीं सकता,
तू बता, क्या तू दुनिया को अपने करतब दिखा नहीं सकता।

******

आंखें

निम्मी भारती,
सहायक प्रबंधक (कार्मिक)

सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

कभी किसी के गम में भीग जाती हैं,
तो कभी अपने ही गमों को छुपाती हैं,
कभी किसी की खुशी में झूम जाती हैं,
तो कभी अपनी ही खुशी को बताती हैं,
ज़ुबां से जो ना कह सकें उसे बताने को तैयार हैं,
इज़हार से इनकार और इनकार से इज़हार
करने को बेकरार हैं ये आंखें,
सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

कभी वर्षों के इंतजार को क्षण भर में बयां करती हैं,
तो कभी वर्षों तक अलग रहने के दुख को छुपाती हैं,
कभी अकेलेपन में भी साथ रहने का विश्वास हैं,
तो कभी भीड़ में भी तनहाई का एहसास हैं,
सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

हया में शर्म से झुक जाती हैं,
तो अधिकार के लिए विरोध भी जताती हैं,
हमेशा लाज़ का आंचल ओढ़ती हैं,
मर्यादा को जो कभी भी नहीं तोड़ती हैं, ये आंखें,
सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

कभी खामोश रहकर दिल का हाल कहती हैं,
तो कभी उसे छिपा कर दर्द को सहती हैं,
कभी खुलकर नई जिन्दगी की धडकन बनती हैं,

तो कभी बंद होकर उसी जिन्दगी का अंत करती हैं ये आंखें,
सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

यादों के मोतियों की माला को पहने, इठलाती और बलखाती हैं,
राज हैं, रहस्य समझाती हैं ये आंखें,
ये आंखें - जिन्दगी का सार पल भर में ही जान जाती हैं।
सुन्दर सपनों का संसार हैं,
अनमोल पलों का इंतजार है, ये आंखें।

****

बचपन की एक याद (संस्मरण)

ललिता भरद्वाज
प्रबंधक (जल संसाधन विकास)

घटना मेरे बचपन की है, जब मैं 4-5 वर्ष की होऊंगी। हम अपने संयुक्त परिवार के साथ हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के एक छोटे से गांव में रहते थे। मेरे पिताजी दिल्ली में नौकरी करते थे इसलिए वे दिल्ली में रहते थे। गांव में हमारी गौशाला थी जो हमारे घर से थोड़ी दूर जंगल में थी। एक दिन मेरी दादीजी शाम के समय गौशाला गयीं लेकिन बहुत देर तक घर वापस नहीं आईं तो मेरी माताजी को मेरी दादी की चिंता सताने लगी, उन्होंने मुझे कहा कि मैं जाकर गांव के छोर से दादी को आवाज लगाकर घर बुला लाऊं। मैं गांव के छोर पर गई और अम्मा अम्मा बुलाने लगी, बहुत देर तक कोई उत्तर न पाकर मैं धीरे-धीरे गौशाला की तरफ बढ़ने लगी। मैं अकेले जंगल में गौशाला पहुंच गई, मैंने अम्मा को बहुत आवाजे लगाई पर अम्मा वहां नहीं थीं। मैंने चारों तरफ देखा अंधेरा ही अंधेरा था। मेरी दादी कुछ काम के सिलसिले में गौशाला से निकलकर गांव में किसी के घर चली गईं थीं।

मैं बहुत डर गई थी तभी मैंने दूर पहाड़ के ऊपर से एक रोशनी को आते देखा। मैं ध्यान से उसे देखने लगी वो रोशनी मेरे पास आ रही थी। मैं देखने की कोशिश कर रही थी कि शायद कोई व्यक्ति लालटेन लेकर आ रहा हो पर मुझे कोई दिखाई नहीं दिया। वह रोशनी धीरे-धीरे मेरे करीब आ रही थी। जैसे ही वह रोशनी मेरे करीब आ गई तो डर के मारे मेरी चीख निकल गई और मैं बेहोश हो गई। जब मुझे होश आया तो मैं अपने घर में थी और सब लोग मेरे इर्दगिर्द खड़े मुझ पर पानी छिडक कर मुझे होश में लाने की कोशिश कर रहे थे। सब लोग बहुत घबराए हुए थे, मेरे होश में आते ही सबकी जान में जान आई। जब मैं बेहोश हुई थी तब मेरे चाचाजी मेरी चीख सुनक कर दौड़कर मेरे पास पहुंच गए थे और जंगल से उठाकर घर ले आये। आज भी मुझे वे घटना याद आती है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जमीन - आसमान

जयश्री पाल, कॉर्पोरेट संपर्क अधिकारी
तुर्गा प्रोजेक्ट ऑफिस, कोलकाता

कल से बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। टिकु से और बर्दाश्त नहीं हो रहा है। छोटी-सी एक झोपड़ी में रहता है टिकु, अपनी माँ और बाबा के साथ। कल से माँ काम पर नहीं जा रही है तो जाहीर सी बात है कि आज भी ठीक से पेट नहीं भरने वाला है। टिकु को कल भी माँ ने सिर्फ मूढ़ी ही खिलाई थी और आज शायद वो भी नहीं है।

कागज की नाव बनाते-बनाते थक गया है टिकु, जिसकी वजह से उसे मार भी खानी पड़ी थी माँ से, बोली- कागज की बरबादी, चूल्हा कैसे जलेगा?" चूल्हा नहीं जलेगा तो खाना नहीं बनेगा, फिर भूखे ही सोना पड़ेगा।

छोटी-सी झोपड़ी आज तो पूरी पानी से भर गई है। माँ ने सुबह ही टिकु को पानी पी कर ही सो जाने को बोल दिया था।

टिकु को याद है, पिछली बार जब बारिश हुई थी, और पानी से भर गया था छोटा-सा कमरा, तब टिकु के बाबा ने कहा था कि इस बार झोपड़ी ईंट देकर थोड़ा सा ऊँचा करेंगे, पर इस बार तो और ज्यादा पानी पड़ रहा है, ईंट भी डूब गई हैं।

कोलकाता के बाईपास एरिया की एक बस्ती में टिकु की झोपड़ी है, जो हर साल थोड़े से बारिश में भी डूब जाती है, और इस बार तो पिछले दो दिन से लगातार बारिश हो रही है। एक दिन बस्ती के सामने सारे लोग भीड़ करके किसी गाड़ी वाले से झगड़ा कर रहे थे, उस भीड़ में टिकु के माँ-बाबा भी थे। टिकु ने अपने दोस्त गुलि को पूछा-
क्या हुआ रे गुलि?"

गुलि बोला- लगता है कुछ मांगने आए हैं वो लोग गाड़ी से"
टिकु बोला- " क्या माँग रहा है रे गुलि ...? हम लोग तो गरीब हैं, पर उनके पास तो गाड़ी है।
गुलि बोला- पता नहीं... कुछ वोट-ओट माँग रहे हैं शायद।
टिकु बोला- वोट...? वो क्या होता है रे...?

गुलि बोला- पता नहीं यार, पर, सब बोल रहे हैं, नहीं दूंगा....।
टिकु बोला- इसका मतलब वो चीज हम लोग के पास है, तो फिर उस दिन माँ-बाबा क्यों बोल रहे थे कि हम लोग के पास कुछ भी नहीं है... ।

गुलि बहुत ही गंभीर भाव से बोला- "शायद हम लोगों से छुपा कर रखे हैं, हम लोग बच्चे हैं ना इसलिए... ।

उस रात टिकु ने अपनी माँ से पूछा भी था- "माँ, वोट क्या होता है"? पर माँ ने टिकु को गुस्सा करके सुला दिया था। टिकु ने मन ही मन में सोचा, जिस दिन वोट मेरे हाथ लग गया, उस दिन मैं भी सबको दिखा दूंगा, पर वो दिखने में कैसा है? किस रंग का हो सकता है? यही सब सोचते-सोचते टिकु को नींद आ गई।

सुबह तो नहीं हुई है, तो फिर इतना चिल्ला-मिल्ली की आवाज कहाँ से आ रही है, लगता है कोई रो रहा है। टिकु उठकर अपने बिस्तर पर ही बैठ गया। पूरे दिन मच्छरदानी लगी ही रहती है। कुछ दिन पहले बस्ती में दो लोगों की मौत हो गई थी मलेरिया के कारण। इसीलिए माँ हमेशा मच्छरदानी लगा कर रखती है।

टिकु ने अपनी आँख मींचते हुए बाहर आकर देखा, चिरन काका की बीबी बहुत रो रही है। साथ में बाकी लोग भी रो रहे हैं और उसकी माँ भी रो रही है। उस भीड़ में कहीं से भागते हुए गुलि आया टिकु के पास। गुलि हाँफते हुए बोला- "पता है चिरन काका मर गए हैं।

टिकु को कुछ समझ में नहीं आया। चिरन काका तो उसके बाबा के साथ काम करते थे। टिकु को अचानक अपने बाबा की चिंता हुई। भागते हुए वो अपनी माँ के पास चला गया।

चिरन काका, बाबा के साथ आज भी काम पर निकले थे। पर आज उनको बाबू ने काम नहीं दिया, बोला कि बारिस में माल लोडिंग बंद है, पर किसी आदमी को शायद अपना घर का सामान शिफ्ट करना था और इसलिए उस आदमी ने चिरन काका से संपर्क किया, पर टिकु के बाबा करने से मना कर दिये, बोले कि काम के अनुसार पैसा बहुत कम है। लेकिन चिरन काका उस आदमी के साथ चले गए, शायद उन्हे पैसे की बहुत जरूरत थी। उस आदमी के घर के पास भी पानी भरा था और उसमे गिरा था बिजली का तार, जो चिरन काका के पैर में लगा और वहीं उनकी मौत हो गई।

आज बहुत दिनों बाद रोटी बन रही है घर में, उसकी खुशबू से टिकु का मन आनंदित हो रहा है, पर माँ आज बाबा से बहुत नाराज है। बारबार बोल रही है कि चलो हम लोग गाँव लौट चलते हैं। बाबा का बोलना है कि गाँव में कोई काम नहीं है। अपना खेत है नहीं, और दूसरे के खेत में काम करने से कुछ मिलता नहीं। पर माँ राजी नहीं है, कह रही है, इतनी तकलीफ, अब सहन नहीं हो रही है, ऊपर से चिरन काका की मौत देखकर डर लगता है।

लंबी लाइन के बाद कमरे में जगह तो मिली पर बैठने को जगह नहीं मिली, टिकु के बाबा आधा सामान लेकर ट्रेन के दरवाजे पर ही बैठे हुए हैं। टिकु अपनी माँ के साथ एक कोने में, दोनों पैरों को हाथों से समेट कर किसी तरह बैठा हुआ है।

दो चोटीवाली रानी का पहनावा कुछ अजीब लगा टिकु को, उसने वैसा ही पहनावा मेले में एक औरत को पहने हुए देखा था, जो राजस्थानी नृत्य करने के लिए आई थी। ये ट्रेन कहाँ ले जा रही है पता नहीं, माँ बोली थी गाँव जा रहे हैं, नाम भी भूल गया है टिकु।

खिड़की के पास जो पानी की बोतल टिकु ने टांग रखी थी, रानी उसे बार-बार देख रही थी।
टिकु उसे देखते हुए बहुत घमंड के साथ बोला- "वो मेरी बोतल है"।
रानी बोली -"बहुत सुंदर है... उसमें क्या है?"
टिकु थोड़ा हैरान तो हुआ फिर भी बोला- "पानी है"।

रानी अपनी माँ के पास गई और उसके कान मे कुछ बोली। माँ ने आहिस्ते से घूँघट उठाकर टिकु की बोतल की तरफ एक नज़र देखा और फिर से एक लंबी घूँघट के पीछे अपना चेहरा छुपा लिया। यह देखकर टिकु ने भी अपनी माँ का घूँघट लंबा करने की कोशिश की, पर माँ ने उल्टे एक चपत लगा दी।

टिकु ने अपनी पानी की बोतल से एक घूंट पानी पीने के समय देखा की रानी उसकी तरफ बहुत हैरान हो कर देख रही है। रानी के चेहरे में उदासी और खुशी दोनों ही है। टिकु अपनी बोतल उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला- पानी पिएगी? रानी उसके हाथ से बोतल लेकर उसके अंदर झाँककर बहुत देर तक कुछ देखती रही, फिर एक घूंट पानी पी कर बोली- "तुम्हें यह पानी कहाँ से मिला?"

टिकु ने बोला - नल से...

रानी - नल? वो क्या होता है?"

टिकु ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए बोला तुम्हें नल नहीं पता?" रानी मायूस होकर बोली "नहीं, हम लोग तो गाँव में बहुत दूर जाकर कुएं से पानी लाते हैं। पता है! पानी लाने के लिए हम लोगों को एक घंटा चलना पड़ता है। इसलिए मैं स्कूल भी नहीं जा पाती हूँ, क्योंकि मुझे माँ के साथ पानी जो लाना पड़ता है पर मेरा भाई स्कूल जाता है। क्या तुम स्कूल जाते हो?" टिकु मायूस होकर बोला - स्कूल! हाँ दीदी लोग आती तो थी पढ़ाने के लिए पर इस बार बारिश होने के कारण क्लास में पानी भर गया और स्कूल का सारा सामान खराब हो गया। इसलिए दीदी लोग बोली कि जब फिर कोई स्कूल बनाने के लिए पैसे देंगे तब फिर से क्लास होगा।

रानी ने पूछा- क्या तुम लोग समंदर के किनारे रहते हो? सुना है कि वहाँ पर बहुत पानी होता है।

टिकु ने बोला- समंदर! पता नहीं... पर हम लोग कभी-कभी पानी पर ही सोते हैं....

रानी बोली- सच! कितना अच्छा है ना...! तो फिर मैं हर रोज स्कूल भी जा सकती थी।

फिर दोनों चुपचाप खिड़की के बाहर देखने लगे। सब कुछ बहुत तेजी से भाग रहा था, लग रहा था मानो आसमान पास आ रहा है। टिकु बोला- देखो-देखो अभी थोड़ी ही देर में हम लोग आसमान छु सकते हैं।

रानी बोली- पता है, आसमान को जमीन से कौन मिलाता है? बारिश... जब बारिश होती है तब जमीन और आसमान एक हो जाता है, और हम सब लोग मोर की तरह नाचने लगते हैं। टिकु सोचने लगा कि बारिश होने से कोई कैसे इतना खुश हो सकता है। बारिश की वजह से ही तो टिकु का घर टूट गया और बारिश के कारण रानी कितनी खुश है।

टिकु और रानी दोनों ही पानी के कारण परेशानियों में पड़े हैं और दोनों का मकसद भी अलग है, लेकिन दोनों की जिंदगी पानी से ही जुड़ी है, शायद इसीलिए... पानी का दूसरा नाम जिंदगी है।

****

पानी की बचत हेतु प्रभावी कृषि विधियां

डा0 के.पी.एस.मलिक
मुख्य (परि.मू.एवं कृषि)

हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या की आजीविका कृषि पर आधारित है। यद्यपि भारतीय कृषि की पिछले 50 वर्षों की विकास यात्रा के दौरान खाद्यानों का उत्पादन लगभग चार गुना बढ़ा है। किन्तु वास्तविकता यह है कि अब भी देश की एक चौथाई आबादी भूख या कुपोषण अथवा दोनों समस्याओं से ग्रस्त है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक संसाधनों एवं सम्पदाओं का अनियंत्रित क्षरण एवं दोहन तथा प्रदूषित होता हुआ पर्यावरण भारतीय कृषि के लिए एक बड़ी चुनौती है। तेजी से गिरता मानव-भूमि अनुपात तथा घटती प्रति व्यक्ति जल की मात्रा हमें जल की उत्पादकता बढ़ाने हेतु गंभीर व सार्थक प्रयास करने हेतु प्रेरित करते हैं। निरन्तर बढ़ती जनसंख्या, घटती कृषि योग्य भूमि एवं जलवायु परिवर्तन की स्थिति में दूसरी हरित क्रान्ति केवल जल के कुशल उपयोग व बारानी क्षेत्रों में अधिक उत्पादन द्वारा ही संभव हो सकती है। इस लेख में कृषि में पानी की बचत के कुछ उपाय जैसे उपयुक्त फसलों का चुनाव और धान-गेहूँ की खेती में पानी की बचत के लिए प्रभावी कृषि विधियों का वर्णन किया गया है।

जल संसाधनों की उपलब्धता

प्राकृतिक प्रदत्त संसाधनों में वायु के बाद जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल समस्त जीव और वनस्पति जगत के अस्तित्व का आधार है। समाज की सभी आर्थिक क्रियाएं किसी न किसी रूप से जल की अपेक्षा करती हैं। इसी कारण कहा जाता है कि जल ही जीवन है। जहां औद्योगिक एवं घरेलू आवश्यकताओं के लिए जल जरूरी है वहीं कृषि की उपज भी जल पर ही निर्भर करती है। यही कारण है कि सिंचित क्षेत्रों की उपज बारानी क्षेत्रों की उपज से लगभग डेढ़ गुनी है। यदि भारत के जल संसाधनों का अवलोकन करें तो पाते हैं कि भारत में औसतन 1190 मिलीमीटर वर्षा होती है जिसके फलस्वरूप भारत में लगभग 400 मिलियन हेक्टेयर मीटर जल प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। इसमें से लगभग 195 मिलियन हेक्टेयर मीटर पानी सतही नदियों, नालों एवं झीलों में आता है। इस 195 मिलियन हेक्टेयर मीटर जल का केवल 36 प्रतिशत अर्थात 69 मिलियन हेक्टेयर मीटर सिंचाई एवं अन्य कार्यों के लिए प्रयोग

किया जा सकता है। वर्षा का कुछ जल रिसाव के द्वारा जमीन के नीचे पहुंचता है तथा भूमिगत जल संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाता है। अनुमानतः 34.2 मिलियन हेक्टेयर मीटर पानी भूमि में समा जाता है। दूसरे संसाधनों द्वारा भूमिगत जल की मात्रा लगभग 9 मिलियन हेक्टेयर मीटर है। इस प्रकार कुल 43.2 मिलियन हेक्टेयर मीटर पानी प्रतिवर्ष भूमि के अन्दर उपलब्ध होता है। अतएव कुल जल संसाधन 112.2 मिलियन हेक्टेयर मीटर है जिसका लगभग 83 प्रतिशत सिंचाई के लिए प्रयोग होता है।

सिंचाई जल की आवश्यकतानुसार फसलों का वर्गीकरण

आज के परिप्रेक्ष्य में जहां 83 प्रतिशत जल कृषि में प्रयोग हो रहा है वहीं आने वाले समय में यह घटकर 70 प्रतिशत के लगभग रह जाने का अनुमान है। इसका मुख्य कारण घरेलू, औद्योगिक तथा अन्य आर्थिक क्षेत्रों की जल आवश्यकता में निरन्तर वृद्धि होना है। इसलिए कृषि में जल की बचत ही एक बीज मंत्र है जिससे कृषि की उत्पादकता को कम पानी होते हुए भी स्थिरता प्रदान की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि जल की उपलब्धता को ध्यान में रखकर ही बोई जाने वाली फसलों का चयन किया जाए। अधिक जल की आवश्यकता वाली फसलों का पूर्णतया निषेध तो कठिन है फिर भी ऐसी फसलों के अधीन क्षेत्रफल कम करके, कम पानी वाली फसलों को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

तालिका-1 : सिंचाई जल की आवश्यकतानुसार फसलों का वर्गीकरण

अधिक जल की आवश्यकता वाली फसलें	औसत जल की आवश्यकता वाली फसलें	कम जल की आवश्यकता वाली फसलें
धान	गेहूँ	जौ
गन्ना	मक्का	ज्वार
केला	टमाटर	बाजरा
अंगूर	आलू	सरसों
नींबू वर्गीय फल	प्याज	चना, मूंग, उडद, मटर
पपीता	सोयाबीन	अरहर, मसूर
बरसीम	कपास, सूरजमुखी	तिल, अरण्डी

तालिका - 1 में सिंचाई जल की आवश्यकतानुसार फसलों का वर्गीकरण दिया गया है जो फसलों की मदद कर सकता है। सिंचाई जल की आवश्यकता फसल की किस्म पर भी निर्भर करती है उदाहरण के तौर पर बासमती धान में कम पानी लगाकर भी अच्छी उपज की जा सकती है।

विभिन्न फसलों में सिंचाई जल की आवश्यकता

प्राय: देखा जाता है कि फसल में जल की आवश्यकता न होने पर भी किसानों द्वारा सिंचाई की जाती है इससे फसल को तो कोई विशेष लाभ नहीं होता परन्तु जल की बर्बादी अवश्य होती है। फसलों में सिंचाई सही समय पर, सही स्थान पर और सही मात्रा में देनी चाहिए। जहां समय से पहले तथा आवश्यकता से अधिक सिंचाई करने पर जल व्यर्थ चला जाता है, वहीं सिंचाई में देरी और कम मात्रा से पौधों की वृद्धि और अन्तत: उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। फसलों में सिंचाई संबंधी दिशा-निर्देश तालिका - 2 में दर्शाए गए हैं।

तालिका- 2 : विभिन्न फसलों में सिंचाई की आवश्यकता

फसल	सिंचाई		
	सिचाई की गहराई (से.मी.)	सिंचाई की संख्या	सिंचाई जल की आवश्यकता (मि.मी.)
धान	3-7	8-30	500-2200
गेहूं	4-7	4-8	300-500
कपास	3-8	2-9	300-700
गन्ना	6-10	5-20	600-2000
ज्वार	6-8	1-8	80-500
मक्का	5-8	3-6	250-500
बाजरा	6-8	1-5	80-300
जौ	4-8	2-6	150-250
सरसों	6-8	1-4	80-250
मूंगफली	5-8	2-8	150-500
तिल	5-8	1-5	80-300
चना	6-8	1-4	80-250
अरहर	6-8	1-4	80-300
आलू	3-6	6-9	300-450
मसूर	6-8	1-3	80-200
मटर	5-8	1-3	80-250
सूरजमुखी	5-8	2-6	150-400
कुसुम	6-8	1-5	80-300

सोयाबीन	5-6	3-7	200-400
बरसीम	4-5	13-16	800-1100
मूंग, उड़द, लोबिया	5-8	2-4	150-300

फसलों में सिंचाई हेतु संवेदनशील अवस्थाएं

पानी की कमी के बावजूद भी अच्छी फसल लेने के लिए सिंचाई का प्रयोग सही समय पर करने से अधिक उपज ली जा सकती है। इसके लिए फसलों के वृद्धि चरणों तथा उन पर पानी की आवश्यकता का ध्यान रखना आवश्यक है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि फसलों में विभिन्न महत्वपूर्ण वृद्धि चरण होते हैं। किसी चरण पर जल की आवश्यकता अधिक होती है और जल के अभाव की विपरीत प्रतिक्रिया भी उसी अनुसार होती है। यदि जल की मात्रा सीमित हो किन्तु उसकी उपलब्धता पर नियंत्रण हो तो सिंचाई दी जा सकती है (तालिका-3)। जैसे गेहूँ में मूलांकुर तथा पुष्पावस्था अन्य अवस्थाओं से अधिक संवेदनशील है, इसलिए इन अवस्थाओं में जल की कमी नहीं होने देने पर कम सिंचाईयों से भी अधिक उपज की जा सकती है।

तालिका 3 : सिंचाई हेतु संवेदनशील अवस्थाएं

धान	पुष्पावस्था एवं बाली निकलना शुरू होने पर
गेहूं	मूलांकुर अवस्था, पुष्पावस्था एवं कल्ले फूटते समय
कपास	पुष्पावस्था एवं टिंडे बनने शुरू होने पर
गन्ना	बढ़वार एवं कल्ले फूटते समय
ज्वार	पुष्पावस्था
मक्का	पुष्पावस्था
बाजरा	पुष्पावस्था एवं कल्ले फूटते समय
जौ	कल्ले फूटते समय एवं दाना बनते समय
सरसों	पुष्पावस्था एवं फली बनते समय
मूंगफली	दाना बनते एवं भरते समय
तिल	पुष्पावस्था एवं दाना आने पर
चना	पुष्पावस्था एवं फली बनते समय
अरहर	पुष्पावस्था शुरू होने पर
आलू	गांठे बनते समय

मसूर	पुष्पावस्था से पहले एवं फली बनते समय
मटर	पुष्पावस्था एवं फली बनते समय
सूरजमुखी	पुष्प कलिका अवस्था एवं दाना बनना शुरू होने पर
कुसुम	पुष्पावस्था
सोयाबीन	पुष्पावस्था एवं फली भरते समय
बरसीम	पुष्पावस्था एवं दाना आने पर
मूंग, उड़द, लोबिया	पुष्पावस्था

फार्म-जल प्रबंधन

फसलों में जल बचत के लिए फसलों के चुनाव के अतिरिक्त अन्य प्रौद्योगिकियां भी विकसित की गई हैं जो स्थान विशेष अथवा फसल विशेष के लिए लाभकारी हो सकती है। धान-गेहूँ फसल चक्र के लिए लाभकारी प्रौद्योगिकियों का वर्णन निम्नलिखित अनुच्छेद में किया जा रहा है।

खेतों पर जल प्रबंधन की प्रौद्योगिकियां

- नालियां या खाले (धोरे) पक्के करें। ऐसा करने से 25-30 प्रतिशत पानी का रिसाव कम हो जाता है तथा पानी की बचत के साथ-साथ खेत के अंतिम छोर तक पानी पहुंचाने में आसानी रहती है।
- आधुनिक लेजर पद्धति द्वारा खेत को समतल करवाएं। इस तकनीकी के प्रयोग से 10-30 प्रतिशत पानी की बचत तथा 25 प्रतिशत तक फसल उपज में वृद्धि पाई गई है। आजकल किराये पर इस प्रकार की मशीनें लेना आसान हो गया है।
- वर्षा के दौरान पानी को व्यर्थ न बहने दें तथा इस पानी को बहुउद्देशीय उपयोगी तालाब में इकट्ठा करें। यह तालाब सिंचाई एवं जल निकास में सहायता प्रदान करता है। यदि तालाब न हो तो इस पानी को भूजल पुनर्भरण के लिए प्रयोग करें।

धान की फसल में पानी की बचत के उपाय

- धान के खेत में वर्षा के पानी को इकट्ठा करने के लिए मेडों की ऊँचाई 10 से 15 से.मी. तक और बढाएं। ऐसा करने से सिंचाई के पानी की बचत की जा सकती है क्योंकि खेत में वर्षा जल अधिक मात्रा में एकत्रित किया जा सकता है।

- धान के खेत में लगातार जल खड़ा रखना काफी लोकप्रिय है लेकिन इससे रिसाव द्वारा जल की काफी क्षति होती है। जल खड़ा रखने के कुछ दिन (1 से 5 दिन) बाद सिंचाई करने से उत्पादन में कमी आए बिना सिंचाई जल में 25 से 50 प्रतिशत तक की बचत की जा सकती है। व्यवहारिक तौर पर धान के खेत में सिंचाई तब करें जब क्यारियों में पतली दरारे नजर आने लगें।
- साठी धान न लगाएं। आमदनी के लिए गर्मी में मूंग की फसल लेकर आय बढायें।
- धान की अगेती फसल न उगाये। धान की रोपाई जून के मध्य सप्ताह से पहले न करें।
- धान में कम अवधि में पकने वाली प्रजातियां अपनाएं।
- कम पानी से उगाई जाने वाली बासमती धान प्रजाति लगाएं।
- फसल विविधीकरण अपनाएं ।

गेहूँ की फसल में पानी की बचत के उपाय

- गेहूँ की फसल में सिंचाई हेतु फव्वारा सिंचाई प्रणाली का उपयोग पानी की बचत के लिए लाभकारी रहता है।
- उठी हुई क्यारी प्रणाली में बुआई करने से पानी की बचत के साथ-साथ जल भराव की समस्या से भी छुटकारा पाया जा सकता है। इस प्रणाली में पानी सिर्फ बीच की नाली में देने से 30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत की जा सकती है।
- जीरो टीलेज पद्धति द्वारा गेहूँ की बुआई करें, इससे पानी की बचत के साथ-साथ उत्पादन लागत में भी 2000 रुपये प्रति हेक्टेयर तक की कमी लाई जा सकती है।
- कम पानी की अवस्था में सिंचाई केवल संवेदनशील अवस्थाओं पर ही करें।
- फसल विविधीकरण अपनाएं।

फसल विविधीकरण में कठिनाईयां

फसल विविधीकरण में काफी कठिनाईयां आती हैं जिनमें से मुख्य हैं :-

- पारम्परिक फसल चक्र से लगाव।
- दूसरे फसल उत्पाद बेचने में कठिनाईयां।
- बाजार भाव में अधिक उतार-चढाव।
- सरकारी खरीद मूल्य का अभाव।
- अन्य फसल उत्पादों के नुकसान का भय जैसे जल्दी खराब होने वाले उत्पादों (फल-सब्जियां आदि) को शीघ्र बेचने की चिंता आदि।

1. कैसे करें फसल विविधीकरण

धान की जगह 25 प्रतिशत क्षेत्र में मक्का, ज्वार या सोयाबीन, साठी धान की जगह मूंग तथा गेहूँ की जगह 25 प्रतिशत क्षेत्र में सरसों लेने से पानी की काफी बचत की जा सकती है। धान-गेहूँ फसल चक्र के स्थान पर एक चौथाई या उससे अधिक क्षेत्र में फलदार वृक्ष व सब्जियां भी उगाई जा सकती हैं। फसल विविधीकरण द्वारा परम्परागत फ़सलों के स्थान पर निम्नानुसार फसलों में बदलाव करके पानी की बचत की जा सकती है।

परम्परागत फसलें	वैकल्पिक फसलें
गेहूँ	सरसों
धान	मक्का, ज्वार, सोयाबीन
साठी धान	मूंग
धान-गेहूँ	फलदार वृक्ष, सब्जियां

2. कितना करें फसल विविधीकरण

धान-गेहूँ फसल चक्र में बदलाव का अर्थ यह नहीं कि धान-गेहूँ उगाना ही नहीं है। आज की परिस्थितियों में जल स्तर में स्थिरता लाने के लिए एक वर्ष में केवल 15 सेमी. पानी की बचत द्वारा ही जलस्तर स्थिर किया जा सकता है। इतनी बचत नीचे सुझाए गए उपायों द्वारा सम्भव हो सकती है।

- धान के क्षेत्रफल में 20 से 25 प्रतिशत की कमी (एक एकड़ की बजाय पौना एकड़)।
- गेहूँ के क्षेत्रफल में 25 प्रतिशत की कमी (एक एकड़ की बजाय पौना एकड़)।
- धान-गेहूँ फसल चक्र में पानी की बचत के लिए तकनीकियों का प्रयोग जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है।

इस लेख में सुझाई गई आसान प्रौद्योगिकियों द्वारा न केवल कम पानी से अधिक उपज की जा सकती है अपितु भूमिगत जल स्तर को भी आज के स्तर पर स्थिर किया जा सकता है तथा बिजली की खपत में भी कमी लाई जा सकती है।

****

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जांच बिन्दु

- ❖ विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (विराकास) का गठन कर नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक आयोजित करें।
- ❖ मूल पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार करें।
- ❖ हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यत: हिन्दी में दें।
- ❖ धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेजों को अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में जारी करें।
- ❖ वेबसाइट द्विभाषी रूप से तैयार करें, और समय-समय पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी अद्यतन करें।
- ❖ सभी कम्प्यूटरों पर यूनिकोड सक्रिय करें।
- ❖ नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में एक पूर्ण कार्यदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करें।
- ❖ कार्यालयों में प्रयुक्त सभी फार्म/नामपट्ट/रजिस्टर के शीर्षक/लेखन सामग्री को द्विभाषीय रूप में मुद्रित कराएं।
- ❖ हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त न करने वाले कार्मिकों को भाषा (प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत) का प्रशिक्षण दिलवाएं। इसके साथ ही संबंधित कर्मचारियों को हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए भी नामांकित करें।
- ❖ विज्ञापनों को हिन्दी और अंग्रेजी के समाचार पत्रों में एक साथ प्रकाशित करें।
- ❖ हिन्दी पुस्तकों पर लक्ष्य अनुसार व्यय किया जाए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य हिन्दी में उपलब्ध करवाया जाए।
- ❖ कार्यालय द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्यत: सुनिश्चित की जाए।
- ❖ सेवा पंजियों में प्रविष्टियां द्विभाषी रूप में करें।
- ❖ राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 में दिए गए बिन्दुओं का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
- ❖ कार्यालय में हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाए।
- ❖ कार्यालय परिसर में राजभाषा के अनुकूल वातावरण के लिए आज का शब्द और आज का विचार प्रदर्शित करें।
- ❖ संस्थान में प्रयोगार्थ सभी प्रकार की नेमी टिप्पणियों को फाइलों पर मुद्रित करें और लक्ष्य को प्राप्त करें।

****

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उत्तर क्षेत्र-। तथा उत्तर क्षेत्र -।। का एक दिवसीय 'राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह'

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 19 नवम्बर 2018 को चंडीगढ़ में एक दिवसीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता किरेन रीजीजू, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा की गई ।

इस समारोह में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के संबंध दो सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में डा. चमन लाल गुप्ता, सेवा निवृत्त प्रोफेसर, शिमला विश्वविद्यालय, डा. गुरमीत सिंह, हिन्दी विभाग के प्रमुख, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ को सम्मेलन में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था।

दूसरे सत्र के बाद वरि.निदेशक (तकनीकी) व निदेशक (कार्यान्वयन) ने अपने-अपने प्रस्तुतीकरण द्वारा प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन व समस्याओं का निवारण किया।

वाप्कोस लिमिटेड की ओर से प्रमुख (रा.भा.) व सहायक प्रबंधक (हिन्दी) ने इस सम्मेलन में भाग लिया था।

इस अवसर पर संयुक्त सचिव (रा.भा.), राजभाषा विभाग के उच्चाधिकारी व केन्द्रीय/राज्य सरकार के कार्यालयों, संगठनों व पीएसयू से अधिकारी भी उपस्थित थे। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय उत्तर-1 व उत्तर-2 में स्थित कार्यालयों के पुरस्कार विजेताओं को माननीय राज्य मंत्री द्वारा विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए।

गीता शर्मा

सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

मेरा भारत महान है

गुरनाम सिहं सोढी
उप मुख्य अभियंता

बचपन से पढ़ते आए थे, सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलस्तिां हमारा,
सबसे प्राचीन सभ्यता है इसकी, कि मेरा भारत महान है

देखता हूँ आज अपने आस पास, तो सोच में पड़ जाता हूँ,
क्या आज भी हम कह सकते हैं कि मेरा भारत महान है,

कब पैदा हुए राम, कब आए हज़रत यहाँ,
बस इन्ही बातों पे लड़ना मज़हब, इसी में इनका भगवान है,
क्या इन पाखंडी नेताओं के बल पर हम कहते हैं कि मेरा भारत महान है?

हवा में धुँए के छल्ले, नशे में लीन आज का नौजवान है,
देश के इस भविष्य को देख कैसे कहें कि मेरा भारत महान है?

बातों में मिठास, पर चिपका है एक जोंक आबादी, प्रदूषण और रिश्वतखोरी का,
बस कुछ नमक की दरकार है,
पुरुष नशा, नारी दुर्दशा, बच्चे पैमाने, बिकती लड़कियाँ,
फिर भी मेरा भारत महान है,

सौ करोड़ की गिनती हमारी, फिर भी एक एक पदक के लिए तरसते हैं,
हर खेल में दूसरों की तारीफ करते हुए।
कैसे कहें कि मेरा भारत महान है?

पैसे कमाने के लिए विदेश जाते लोग,
तो कहीं कर्ज़ के चलते खुदखुशी करते किसान हैं,
समझा सकते हो तो समझाओ उनके परिवारों को,
कि आखिर कैसे उनका भारत महान है?

अपने घर में बैठ कर बातें ही तो करते हैं हम,
खुद कुछ नहीं करते, क्योंकि दूसरों पर आरोप लगाने में हमारी शान है,
यूँ चुप ना रहो, कुछ करो ताकि हम कल भी कह सकें,
पूरे गर्व से, बिना किसी सन्देह के,
कि हाँ मेरा भारत महान है,
हाँ मेरा भारत सबसे महान है।।

****

दूसरों की पसंद से जीने के लिए बहुत छोटी है जिन्दगी
(स्टीव जॉब्स के जन्मदिन पर स्पेशल)

साभार : नवभारत टाइम्स्

ऐपल के संस्थापक स्टीव जॉब्स की जिन्दगी, उनके विचार, उनके कर्म दुनिया के लिए प्रेरणा बन गए हैं। स्टीव जॉब्स को दुनिया महान अविष्कारक और बिजनसमैन के साथ-साथ कुशल वक्ता भी मानती है। खास यह है कि दुनिया पर छाने वाले स्टीव जॉब्स का भारत से भी जुड़ाव रहा है। स्टीव कहते थे कि वह उस लम्हे को कभी नहीं भूल सकते, जब उन्होंने कॉलेज छोड़ने का फैसला लिया था। उस दौर में वह दोस्तों के साथ जमीन पर सोते थे और संडे को 11 किमी. पैदल चलकर खाने के लिए 'हरे कृष्णा' मंदिर में जाते थे।

दरअसल, भारतीय अध्यात्म में स्टीव की गहन दिलचस्पी थी और वह लीक से हटकर कुछ करना चाहते थे। जब वह 18 साल के थे, अपने दोस्त देन कोटके के साथ आध्यात्मिक ज्ञान की तलाश में भारत आए थे। यह साल 1974 की बात है। स्टीव और कोटके उत्तराखण्ड पहुंचे। इसी दौरान वे नैनीताल स्थित नीम करौली बाबा के कैंची आश्रम पहुंचे। यहां वे अध्यात्मवाद और अस्तित्ववाद का ज्ञान हासिल करना चाहते थे। हालांकि, उस समय तक नीम करौली बाबा का देहांत हो चुका था, लेकिन उन्होंने यहां 'ऑटोबायोग्रफी ऑफ ऐन योगी' किताब पढ़ी। इसे पढ़कर उनके विचार पूरी तरह बदल गए और जीवन को देखने का नजरिया भी।

उन्होंने नीम करौली बाबा के उस दर्शन को पूरी तरह से आत्मसात कर लिया जिससे दूसरों की सेवा करते रहने मात्र से ही खुद की जिन्दगी में बदलाव हो जाता है। यही वह बात थी, जो स्टीव को भा गई। इसके बाद तय किया कि दूसरों की सेवा करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है। उन्हें अहसास हुआ कि समाज में कोई शख्स सिर्फ अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए पैदा नहीं होता बल्कि उसका फर्ज बनता है कि वह समाज के लिए भी कुछ करे। उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश में घूमते हुए स्टीव ने बौद्ध धर्म को भी करीब से जाना और यहां से अध्यात्मिक शिक्षा पाने के बाद जब वापस अमेरिका लौटे, तो वह पूरी तरह बदल चुके थे। वह बौद्ध बन चुके थे। उन्होंने सिर मुंडवा लिया और पारंपरिक भारतीय कपड़े पहनने लगे थे। यही नहीं, उन्होंने मांसाहार को छोड़कर पूरी तरह शाकाहार को अपना लिया।

स्टीव का कहना था कि उन्हें अपनी कम्पनी का नाम ऐपल भी भारत से ही मिला। जब वह भारत आए तो उन्होंने 15 दिनों तक सबसे ज्यादा ऐपल ही खाए थे। बस यहीं से इन्हें अपनी कम्पनी का नाम सूझा और फिर ऐपल का नाम पूरी दुनिया में छा गया।

****

एक कहानी- बाबू की हंसी

साभार : नवभारत टाइम्स्

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में गया था। वहां मैं जब भी जाता हूं, मेरी कोशिश होती है कि अधिक से अधिक लोगों से मुलाकात हो जाए।

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में पहुंच कर गार्ड से बात कर रहा था कि और क्या हाल है आप लोगों का, तभी मोटरसाइकिल पर एक आदमी आया और उसने झुक कर प्रणाम किया।

"संदीप भैया, प्रणाम।"

मैंने पहचानने की कोशिश की। बहुत पहचाना-पहचाना लग रहा था। पर नाम याद नहीं आ रहा था।

उसी ने कहा, भैया पहचाने नहीं? हम बाबू हैं। बाबू। उधर वाली आंटी जी के घर काम करते थे।

मैंने पहचान लिया। अरे ये तो बाबू है। सी ब्लॉक वाली आंटी जी का नौकर।

"अरे बाबू, तुम तो बहुत तंदुरुस्त हो गए हो। आंटी कैसी हैं?"
बाबू हंसा। ", "आंटी तो गईं।"
"गईं? कहां गईं? उनका बेटा विदेश में था, वहीं चली गईं क्या? ठीक ही किया उन्होंने। यहां अकेले रहने का क्या मतलब था?"
अब बाबू थोड़ा गंभीर हुआ। उसने हंसना रोक कर कहा, "भैया, आंटी जी भगवान जी के पास चली गईं।
"भगवान जी के पास? ओह! कब?"
बाबू ने धीरे से कहा, "दो महीने हो गए।"
"क्या हुआ था आंटी को?"

"कुछ नहीं। बुढ़ापा ही बीमारी थी। उनका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आया था। उसे याद करती थीं। पर अपना घर छोड़ कर वहां नहीं गईं। कहती थीं कि यहां से चली जाऊंगी तो कोई मकान पर कब्जा कर लेगा। बहुत मेहनत से ये मकान बना है।"

"हां, वो तो पता ही है, तुमने खूब सेवा की। अब तो वो चली गईं, अब तुम क्या करोगे?"

अब बाबू फिर हंसा। मैं क्या करुंगा भैया? पहले अकेला था। अब गांव से फैमिली को ले आया हूं।

दोनों बच्चे और पत्नी अब यहीं रहते हैं।"
"यहीं मतलब उसी मकान में?"

"जी भैया। आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था। एक हफ्ता रुक कर चले गए। मुझसे कह गए हैं कि घर देखते रहना। चार कमरे का इतना बड़ा फ्लैट है। मैं अकेला कैसे देखता? भैया ने कहा कि तुम यहीं रह कर घर की देखभाल करते रहो। वो वहां से पैसे भी भेजने लगे हैं। और सबसे बड़ी बात ये है कि मेरे बच्चों को यहीं स्कूल में एडमिशन मिल गया है। अब आराम से हूं। कुछ-कुछ काम बाहर भी कर लेता हूं। भैया सारा सामान भी छोड़ गए हैं। कह रहे थे कि दूर देश ले जाने में कोई फायदा नहीं।"

मैं हैरान था। बाबू पहले साइकिल से चलता था। आंटी थीं तो उनकी देखभाल करता था। पर अब जब आंटी चली गईं तो वो चार कमरे के मकान में आराम से रह रहा है।

आंटी अपने बेटे के पास नहीं गईं कि कहीं कोई मकान पर कब्जा न कर ले।

बेटा मकान नौकर को दे गया है, ये सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा।

मुझे पता है, मकान बहुत मेहनत से बनते हैं। पर ऐसी मेहनत किस काम की, जिसके आप सिर्फ पहरेदार बन कर रह जाएं?

मकान के लिए आंटी बेटे के पास नहीं गईं। मकान के लिए बेटा मां को पास नहीं बुला पाया।

सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं।

जिसने मकान बनाया वो अब दुनिया में ही नहीं है। जो हैं, उसके बारे में तो बाबू भी जानता है कि वो अब यहां कभी नहीं आएंगे।

मैंने बाबू से पूछा कि तुमने भैया को बता दिया कि तुम्हारी फैमिली भी यहां आ गई है?
"इसमें बताने वाली क्या बात है भैया? वो अब कौन यहां आने वाले हैं? और मैं अकेला यहां क्या करता?

जब आएंगे तो देखेंगे। पर जब मां थीं तो आए नहीं, उनके बाद क्या आना? मकान की चिंता है, तो वो मैं कहीं लेकर जा नहीं रहा। मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।"

बाबू फिर हंसा।

बाबू से मैंने हाथ मिलाया। मैं समझ रहा था कि बाबू अब नौकर नहीं रहा। वो मकान मालिक हो गया है।

हंसते-हंसते मैंने बाबू से कहा, "भाई, जिसने ये बात कही है कि मूर्ख आदमी मकान बनवाता है, बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है, उसे ज़िंदगी का कितना गहरा तज़ुर्बा रहा होगा।"

"बाबू ने धीरे से कहा, "साहब, सब किस्मत की बात है।"

मैं वहां से चल पड़ा था ये सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की ही बात है। लौटते हुए मेरे कानों में बाबू की हंसी गूंज रही थी। "मैं मकान लेकर कहीं जाऊंगा थोड़े ही? मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।"

मैं सोच रहा था, मकान लेकर कौन जाता है? सब देखभाल ही तो करते हैं।

****

मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। अपने जीवनकाल में ही वह "उपन्यास सम्राट" की उपाधि से सम्मानित हुए। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विद्याओं में साहित्य की सृष्टि की। परन्तु जो यश और प्रतिष्ठा उन्हें उपन्यास और कहानियों से प्राप्त हुई, वह अन्य विद्यओं से प्राप्त न हो सकी।

प्रेमचंद के उपन्यास न केवल हिन्दी उपन्यास साहित्य में बल्कि सम्पूर्ण भारतीय सासहित्य में मील के पत्थर हैं। उन्होंने 'सेवासदन' (1918), 'प्रेमाश्रम' (1921), 'रंगभूमि' (1925), 'कायाकल्प' (1926), 'निर्मला' (1927), 'गबन' (1931), 'कर्मभूमि' (1932) से होता हुआ यह सफर 'गोदान' (1936) को पूर्णता को प्राप्त हुआ।

पानी

डा. उदय रोमन
परियोजना प्रबंधक, मध्य क्षेत्र

कहीं लपक लपक, कहीं टपक टपक, कहीं झपक झपक, कहीं छपक छपक
कहीं मंदिर में कहीं मस्जिद में, चैबारे में गुरूद्वारे में
कहीं डमडम में कहीं संगम में, काबे के आवे जम जम में
कभी खाई में गहराई में, कभी बर्फीली ऊँचाई में
कहीं खेतों में कहीं रेतों में, ठंडे पानी के सोतों में
कभी रेलों में कभी मेलों में, कभी गोलों में कभी खेलों में
कभी ओलों में कभी शोलों में, कभी कवि रहिमन के बेलों में
रहिमन पानी राखियों बिन पानी सब सून, पानी गये ना ऊबरे मोती मानुस चून
कभी दंगों में, कभी रंगों में, कभी भंगों में, हुडदंगों में
मदिरा में मस्त मलंगों में, सतरंगी तान तरंगों में
कभी होली में, कभी टोली में, कभी छोली में, कभी रोली में
नारों में त्यौहारों में, बस्ती की लंबी कतारों में
तालों में पातालों में, कभी नदिया में कभी नालों में
कभी गागर में कभी सागर में, मजदूर की दढी छागल में
कभी घोटों में कभी लाटों में, छातों में बरछातों में
कभी खप्पर पे कभी छप्पर पे, झुग्गी की टूटी टप्पर पे
कभी हाॅथों में कभी बातों में, संवादों में विवादों में
वादों में इरादों में, कावेरी के कर्नाटक में
कभी अर्पण में, कभी तर्पण में, कभी आसों में, कहीं सांसों में
कभी कलछी में कभी कांसों में, घातक की निश्चल प्यासों में
कभी नींदों में, उम्मीदों में, कभी पत्तों पर कभी रस्तों पर
कभी पनघट पे कभी जमघट में, कभी झंझट में कभी संकट में
कहीं कमलों में कहीं गमलों में, सकोरों में कटोरों में
मिट्टी की सौंधी खुशबू में, कभी मेहनत के पसीने में
घनघोर बरसते बादल में, कभी बाढ़ों में अकालों में
तोड़ समंदर की मर्यादा, कंपित भूजल भूचालों में
''पानी कहां कहां नहीं मिलता
पर जहां जरूरत है उसको वहां नहीं मिलता''
''इसीलिये हर बूंद का संचय करें, चलो पानी का अक्षय करें''

****

विश्व हिन्दी सम्मेलन

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

हिन्दी के सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विभिन्न देशों में 'विश्व हिन्दी सममेलन' के रूप में मनाये जाते हैं। विश्वभर के हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषाविद् एवं विषय के विशेषज्ञ इस सम्मेलन में भाग लेते हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की संकल्पना हिन्दी को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस एवं व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। सम्मेलन का उद्देश्य तत्कालीन वैश्विक परिस्थिति में हिन्दी किस प्रकार से सेवा का साधन बन सकती है इस पर विचार करना था। साथ ही यह कि किस प्रकार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र "वासुधैव कुटुम्बकम्" विश्व के समक्ष प्रस्तुत करके "एक विश्व एक मानव परिवार" का संचार करे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सदस्यों द्वारा 1973 में इसकी संकल्पना की गई थी। इस संकल्पना का 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित करके मूर्तरूप दिया गया। तब से लेकर हिन्दी की यह सदानीरा अपनी वैश्विक यात्रा में अनेक भाषाई कुंभों की साक्षी रहते हुए अपने पड़ाव की ओर निकल पड़ी। अभी तक 11 विश्व हिन्दी सम्मेलन विभिन्न देशों में आयोजित किये जा चुके हैं। आइए, इस संदर्भ में आपके ज्ञान को बढ़ाते हुए आयोजित सम्मेलनों की जानकारी देते हैं:-

<u>प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन</u> :- नागपुर, भारत में 10 से 12 जनवरी, 1975 को प्रथम विश्व हिन्दी सममेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जन्ती इस सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष थे। इस सममेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए। इस प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था "वसुधैव कुटुम्बकम्"। सम्मेलन में हिन्दी भाषा के लिए पारित किए गए विचार थे :-

1. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को अधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।
2. वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।
3. विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अत्यंत विचारपूर्वक योजना तैयार की जाए।

दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन :- मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 28 से 30 अगस्त, 1976 को दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ0 सर शिवसागर रामगुलाम इस सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष थे। भारत के तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्री डॉ0 कर्णसिंह के नेतृत्व में 23 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में भारत के अलावा 17 देशों 181 प्रतिनिधि शामिल हुए। इस दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था ''वसुधैव कुटुम्बकम्''।

तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन :- भारत की राजधानी दिल्ली में 28 से 30 अक्टूबर 1983 को तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ इस सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष थे। इस समारोह में हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा ने भी भाग लिया। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के 6566 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमें विदेशों से आए 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था ''वसुधैव कुटुम्बकम्''।

चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन :- मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 2 से 4 दिसम्बर, 1993 को चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। मॉरीशस की कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार मंत्री श्री मुक्तेश्वर चुनी जी इस सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष थे। इस सम्मेलन में मॉरीशस के प्रतिनिधियों के अलावा कुल 200 प्रतिनिधि शामिल थे। चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था ''वसुधैव कुटुम्बकम्''।

पांचवा विश्व हिन्दी सम्मेलन:- त्रिनदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में 4 से 8 अप्रैल, 1996 को पांचवा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक हिन्दी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीतारामजी थे और सम्मेलन की आयोजन संस्था त्रिनिदाद की हिन्दी निधि ही थी। इस सम्मेलन में भारत के 17 सदस्यों के अलावा अन्य देशों से 257 प्रतिनिधि शामिल हुए। पांचवे विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था ''प्रवासी भारतीय और हिन्दी''।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन:- लंदन में 14 से 18 सितम्बर, 1999 में छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। यू.के. की हिन्दी समिति, बर्मिघम भारतीय भाषा संगम और गीतांजली बहुभाषी समुदाय ने चार्क में मिलजुल कर राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन

किया जिसके अध्यक्ष डा0 कृष्ण कुमार थे। इस सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था "हिन्दी और भावी पीढ़ी"।

सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन:- सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में 5 से 9 जून, 2003 को सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा 12 से अधिक देशों के विद्‌वान व हिन्दी सेवी शामिल हुए। श्री जानकी प्रसाद सिंह इस सम्मेलन के आयोजक थे। सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था "विश्व हिन्दी : नई शताब्दी की चुनौतियां"।

आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन:- संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क में 13 से 15 जुलाई, 2007 को आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के आयोजन से संबंधित व्यवस्था अमेरिका की हिन्दी सेवी संस्थाओं की मदद से अमेरिका के भारतीय विद्‌या भवन में की गई थी परन्तु इस सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्‌वारा किया गया था। आठवें विश्व हिनदी सम्मेलन का बोधवाक्य था "विश्व मंच पर हिन्दी"।

नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन:- दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहांसबर्ग में 22 से 24 सितम्बर, 2012 को नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्‌वारा किया गया और इस सहयोगी संगठन हिन्दी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका का था। नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारत के लगभग 300 प्रतिनिधि तथा 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नौवें विश्व हिन्दी सममेलन का बोधवाक्य था "भाषा की अस्मितर और हिन्दी का वैश्विक संदर्भ"।

दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन:- मध्यप्रदेश सरकार की सहभागिता से 10 से 12 सितम्बर, 2015 को भोपाल के लाल परेड मैदान में दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। भोपाल स्थित माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्‌यालय और अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्‌यालय सम्मेलन की सहभागी संस्थाएं थीं। इस सम्मेलन के आयोजन में संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए परामर्श, प्रबंधन और कार्यक्रम से संबंधित तीन समितियां बनाई गई थीं। परामर्शदाता मण्डल एवं कार्यक्रम समिति की अध्यक्ष माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज थीं तथा प्रबंधन समिति के अध्यक्ष माननीय विदेश राज्य मंत्री जनरल (सेवानिवृत्त) डा0 वी.के.सिंह थे। सम्मेलन में विदेश नीति में हिन्दी, विज्ञान क्षेत्र में हिन्दी, बाल साहित्य में हिन्दी, अन्य

भाषा भाषी राज्यों में हिन्दी, गिरमिटिया देशों में हिन्दी, विदेशों में हिन्दी शिक्षण समस्याएं तथा समाधान, विदेशियों के लिए भारत में हिन्दी अध्ययन की सुविधा आदि विषयों पर विभिन्न समानांतर सत्र आयोजित हुए जिसके भविष्य में दूरगामी एवं सार्थक परिणाम निकलकर सामने आएंगे। विभिन्न संस्थाओं की सहभागिता से सम्मेलन स्थल पर दो प्रर्दशनियां भी लगाई गईं। दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था - ''हिन्दी जगत : विस्तार एवं सम्भावनाएं''।

<u>ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन</u>:- मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में ''स्वामी विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय सभा केन्द्र'' में 18 से 20 अगस्त, 1993 को ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से किया गया। इस सम्मेलन का शुभारंभ मॉरीशस के माननीय प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ व श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ 'हिन्दी विश्व और भारतीय संसकृति' विषय के साथ किया गया। शुभारंभ के बाद स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी को श्रद्धांजलि देते हुए काव्यांजलि सभा का आयोजन किया गया। मॉरीशस में सृजित गंगाघाट पर भव्य आरती का आयोजन किया गया था। मॉरीशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति परम शिवम पिल्लै वयापुरी ने कहा कि उनका देशा मिनी भारत है और अगर भारत माता है तो मॉरीशस पुत्र बन जाता है। उन्होंने मॉरीशस की एक यूनिवर्सिटी का नाम स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नाम पर रखने की घोषणा की। सम्मेलन में विश्व भर से लगभग 2000 हिन्दी विद्वान/कवि/साहित्य कार आदि शामिल हुए। इस तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति पर आठ उप-विषयों पर आयोजित विभिन्न सत्रों में विचार-विमर्श हुआ।

****

देश की आर्थिक समृद्धि के लिए अपनी भाषा का विकास आवश्यक है।

\- महादेवी वर्मा

झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता

संकलन : नवभारत टाइम्स्

मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है उसका घमंड। अहंकारी व्यक्ति सोचता है कि यदि वह किसी के सामने झुक गया, तो लोग उसे छोटा और कमजोर समझकर उसकी उपेक्षा करेंगे। लेकिन जीवन की वास्तविकता यह नहीं है। झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता। वह और बड़ा और मजबूत बन जाता है। फल से लदी हुई डाल झुकी हुई होती है और बड़ी सहनशील भी। अहंकार और दंभ के कारण ही राजकुमार होते हुए भी दुर्योधन अपनी प्रभुता स्थापित नहीं कर सका। पद के अनुरूप प्रतिष्ठा अर्जित करना तो दूर, वह लोगों की नजर में भी गिर गया था। बड़ा तो वह है जो दूसरे के अधिकार की रक्षा करता है। दूसरे को सम्मान देकर अपने सम्मान को बढ़ाता है। दूसरे को नीचा दिखाकर हम कभी बड़े नहीं बन सकते।

अपने समय के मशहूर कवि रहीम बादशाह अकबर के दरबार में न केवल मंत्री के रूप में मौजूद थे बल्कि वे उनके नवरत्नों में भी एक थे। इतने ऊंचे पद पर होते हुए भी वह एक कच्ची झोपड़ी में ही रहते थे। वह बेहद सादा जीवन जीते थे। अपने वेतन का ज्यादातर हिस्सा वह दान-पुण्य आदि पर खर्च कर देते थे। अभिमान उन्हें छू तक नहीं गया था। अपनी गर्दन हमेशा नीची रखते हुए वह हरदम सरल ही बने रहते थे। एक बार किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा- 'इतने ऊंचे पद पर होते हुए भी आप सदा नीचे की ओर मुख क्यों किए रहते हैं? इतना अधिक दान-पुण्य करते हैं, फिर भी आपकी नजरें ऊपर की ओर क्यों नहीं उठतीं?' विनम्रता के धनी रहीम ने जवाब दिया- 'देने वाला तो कोई और है जो दिन-रात भेजे जा रहा है। भ्रम में लोग मुझे श्रेय दे रहे हैं। इसलिए संकोच के कारण मेरी नजरें नीची ही रहती हैं।'

भगवान बुद्ध के परम शिष्य आनंद ने एक बार डरते-डरते उनसे पूछा-'प्रभो, प्रवचन देते समय आप तो उच्च आसन पर बैठते हैं, लेकिन श्रोताओं को नीचे बैठकर सुनना पड़ता है। क्या यह गुरु शिष्य में भेद की स्थिति पैदा नहीं करता?' बुद्ध ने मुस्कराते हुए कहा- 'आनंद, क्या तुमने कभी झरने का जल पिया है?' आनंद ने उत्तर दिया- 'हां, अनेक बार पिया है गुरुदेव।' इस पर गुरुदेव ने कहा- 'तब क्या तुमने देखा नहीं कि जल हमेशा ऊपर से नीचे की ओर ही गिरता है। उसे नीचे रहकर ही पीना पड़ता है। मान लो, तुम किसी पहाड़ी पर खड़े हो, तो क्या यह संभव है कि वहीं से नीचे बह रही नदी का जल पीने की तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए?'

नीचे रहकर ही किसी वस्तु को प्राप्त किया जा सकता है। दार्शनिक रस्किन ने सच ही कहा है कि विनम्रता किसी भी महान व्यक्ति के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता होती है।

******

आर्ट ऑफ लिविंग अर्थात जीवन जीने की कला – एक अनुभव

प्रवीण कुमार अग्रवाल
वरि.प्रणाली अधिकारी, ग्रेड-I.

कहने को तो यह तीन शब्द "जीने की कला" बहुत साधारण से लगते हैं, लेकिन जैसे ही हम इनसे जुड़ते हैं वैसे ही हमारी जिंदगी में अलग ही आनंद आने लगता है।

इस पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य अपने को संवारने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। वह दिन प्रतिदिन नये-नये अविष्कार करता रहता है। मनुष्य ने अनेकों प्रयत्न करके भिन्न-भिन्न उपकरणों के रिमोट तो बना लिए हैं और उन सभी रिमोटों को हाथ में लेकर वह बहुत सुख का भी अनुभव करता है। लेकिन उसने अपनी जिन्दगी का रिमोट दूसरे व्यक्तियों के हाथों में दे रखा है। जब कोई हमारी तारीफ करता है तब हम बहुत खुश हो जाते हैं इसके विपरीत यदि कोई हमारी बुराई करता है तब हम बहुत दुःखी हो जाते हैं और बुराई करने वालों की निंदा करने लगते हैं। जिसके कारणवश हमारा बहुमूल्य समय बेवजह ही नष्ट हो जाता है। सुख-दुःख जीवन के दो पहलू हैं और वह आने स्वाभाविक है। लेकिन अपने दुखों से दुःखी होने की जगह उन से हंस कर गुजर जाना जीवन जीने की कला कोर्सों में सिखाया जाता है। जीवन जीने की कला हमें अंदर से मजबूत बनाती है जिससे छोटी-छोटी बेकार की बातों का हम पर कोई असर नहीं होता और हम अपना जीवन हंसी खुशी से जीते चले जाते हैं।

आज के आधुनिक युग में प्रत्येक मनुष्य को भिन्न-भिन्न परेशानियां जकड़े रहती है। जैसे किसी को मानसिक परेशानी है, किसी को गहन बीमारी लगी हुई है, किसी को गुस्सा बहुत जल्दी-जल्दी आता है, किसी को ईष्या-द्वेष सताते रहते हैं, कोई अपना अधिक मान-सम्मान चाहता है, तो किसी को अधिक पैसा कमाने की चाह रहती है इत्यादि। इन सभी समस्याओं को जानते हुए भी हम उन्हें कम करने के उपाय ढूंढने के बजाय हम इनमें और अधिक उलझ जाते हैं। कुछ लोग भूतकाल की बातें सोचते रहते हैं और परेशान रहते हैं। जबकि कुछ लोग भविष्य की चिंता में घुलते रहते हैं और परेशान रहते हैं। जिसके कारण वे सभी लोग अपना वर्तमान समय भी दुखदायी बना लेते हैं। जीवन जीने की कला में हमें वर्तमान में जीना सिखाया जाता है। भूतकाल में जो हुआ उससे सीख ले कर हमें अपने वर्तमान समय में उसका सुधार करने की चेष्टा करनी चाहिए जिससे हम अपने आने वाले भविष्य को उज्जवल बना सकें। अधिकतर लोग अपने आज का काम कल पर डाल देते हैं और काम करने से बचना चाहते हैं लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि कल तो कभी आने वाला नहीं है।

इसलिए हमें अपना आज का काम अभी समाप्त कर लेना चाहिए, तब हमारा भविष्य अपने आप ही सुधर जाएगा।

यदि हम अपने आस-पास के लोगों को ध्यान से देखें तो पायेंगे कि प्रत्येक मनुष्य साधनों को अधिक से अधिक जमा करने की होड़ में लगा हुआ है जिससे वह अपने मन की शांति व खुशी को गंवा देता है। वास्तव में अगर देखा जाए तो मन की खुशी साधनों को जमा करने में नहीं बल्कि साधना करने से होती है। साधना यानी मेडिटेशन अर्थात् ध्यान और सांसों का व्यायाम करने का सही तरीका जीने की कला में सिखाया जाता है ।

हम अपने शरीर से पूरा दिन काम लेते हैं लेकिन शरीर के लिए थोडा़ सा भी समय नहीं निकाल पाते उसकी देखभाल के लिए। जिसके कारण हमारा शरीर थका-थका और मन परेशान रहता है। हमें गुस्सा जल्दी-जल्दी आने लगता है जिसका हमारी कार्य क्षमता पर विपरीत असर पडता है। हम सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाते और बाद में पछताते रह जाते हैं। इन सभी परेशानियों से बचने के लिए हमें 24 घण्टों में से कम से कम 1 घण्टा हर रोज अपने शरीर की देखभाल के लिए निकालना चाहिए । जैसे हम अपने मोबाइल को रोजाना चार्ज करते हैं वैसे ही हमें अपने शरीर को भी प्रतिदिन प्रात: उचित व्यायाम करके चार्ज करना चाहिए। सुदर्शन क्रिया (सांसों का व्यायाम) एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रिया है जोकि आर्ट ऑफ लिविंग में सिखाई जाती है जिसको प्रतिदिन करने से हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है जो हमें पूरे दिन के लिए स्फूर्ति प्रदान करती है और हमारी कार्यक्षमता का अद्भुत विकास होता है। हमें अपना शरीर बहुत हल्का महसूस होता है।

सुदर्शन क्रिया, आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर जी की एक सुंदर देन है। जैसे एक सूरज सारे संसार का अँधेरा मिटा कर उजाला कर देता है वैसे ही श्री श्री रविशंकर जी ने बहुत से लोगों के मन व जीवन के अंधेरे को मिटाना सिखाया है। ‘जीने की कला’ नामक कोर्स के माध्यम से आज विश्व के 140 देशों में विभिन्न कोर्स चलते रहते हैं। जिसको अपनाकर लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। यह कोर्स एक रसगुल्ले की तरह है जिसको देखकर या सुनकर अनुभव नहीं किया जा सकता बल्कि उसको स्वयं खाकर असली स्वाद व मिठास का अनुभव व आनंद लिया जा सकता है। गुरूजी का कहना है कि प्रत्येक इंसान को सेवा करनी चाहिए। सेवा करने से आत्मिक खुशी मिलती है जो हमारी छवि को भी निखारती है। जब हम एक हाथ किसी की मदद के लिए बढाते हैं तब परमात्मा सौ हाथ हमारी तरफ मदद के लिए बढ़ाता है लेकिन जब तक हम ऐसा करने के लिए सोचते रहते हैं तब तक परमात्मा की कृपा से भी वंचित रह जाते हैं। आर्ट ऑफ लिविंग हमें सिखाती है कि

इंसान सिर्फ बड़े-बड़े कार्य करने से ही महान नहीं बनता अपितु छोटे-छोटे कार्यों में अपना 100 प्रतिशत योगदान देकर भी महान बन सकता है।

मनुष्य सारी उम्र खुशियां पाने की खोज में इधर-उधर भटकता रहता है, लेकिन खुशियां तो उसके स्वयं के अंदर ही विद्‌यमान हैं जिनको पहचानना हमें आर्ट ऑफ लिविंग में सिखाया जाता है। जीवन जीने की कला नामक कोर्स में हमें कुछ ऐसे ही छोटे-छोटे सूत्र दिए जाते हैं जिनको अपनाकर हम अपनी मुश्किलों के ताले को बडी आसानी से खोलते जाते हैं। जिससे हम अपने जीवन को हरा-भरा एवं खुशहाल बनाने में समर्थ हो जाते हैं।

******

होली : प्रेम और स्नेह का त्यौहार

होली या होलिकात्सव का प्रारंभ कब हुआ, इस संबंध में 'नारद पुराण' में एक कथा आती है। दानवराज हिरण्याकश्यप का पुत्र प्रहलाद भगवान का भक्त था। हर क्षण वह भगवान के भजन एवं प्रेम में डूबा रहता था। हिरण्याकश्यप नहीं चाहता था कि उसका पुत्र इस प्रकार के आचरण में लीन रहे। वह असुर था, इस कारण वह देवताओं से बैर रखता था तथा उनसे घृणा करता था। उसने बहुत प्रयत्न किया कि उसका पुत्र प्रहलाद उसकी पूजा करे न कि भगवान की। उसने अपने रसोईये द्‌वारा प्रहलाद को विष दिलवाया, सर्प से डंसवाया, पहाड़ की चोटी से गिरवाया किन्तु उसे तनिक भी क्षति नहीं हुई और वह अपनी टेक पर अडिग रहा। कहा भी गया है:-

जाको राखे साइयां, मारि सके ना कोय।
बाल न बांका करि सके जो जग़ बैरी होय।।

सभी कठिनाईयों में भगवान ने उसकी रक्षा की और वह तप्त कंचन के सदृश तपकर निकलता। अंत में दानव पिता ने भक्त प्रहलाद को अपनी बहन होलिका जिसको आग में न जलने का वरदान मिला था, की गोद में बैठाकर प्रज्जवलित ज्वाला के मध्य बैठा दिया लेकिन यह आश्चर्य हुआ कि वरदान प्राप्त होलिका भस्मीभूत हो गई और बालक हंसता हुआ आग के बीच बैठा रहा, मानो कमल के फूल पर बैठा हो। यह मानवता की राक्षसत्व पर एक महान विजय थी, जिसे देख-सुनकर लोगों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वे आनंद विभोर हो उठे और घर-घर आनंदोत्सव मनाया जाने लगा। इसी दिन से होलिकात्सव मनाया जाने लगा जो कालान्तर में होली कहा जाने लगा।

******

थोड़ा मैं भी उड़ना चाहता हूँ

पुरषोत्तम कुमार, प्रारूपकार
केन्द्रीय जल आयोग

थोड़ा मैं भी उड़ना चाहता हूँ
आसमान की चोटी को छू कर
मैं वहाँ से मुड़ना चाहता हूँ
थोडा मैं भी उडना चाहता हूँ।

मैं भी देखू इस दुनिया को
आसमान की ऊंचाई से
जहाँ से देखे है नभचर सारें
इंसानों को गहराई से

मैं भी देखू उस ऊंचाई से
सारे दृश्य रे मनभावन
जिस देश में गंगा बहती है
वो देश है रे कितना पावन

उड़ने की चाह में
मैं मन को लगा पंख
इस नील गगन में

उड़ने की कल्पना भर करता हूँ
और फिर से यही कहता हूँ
थोड़ा मैं भी उड़ना चाहता हूँ।।

उड़ लू मैं भी इस नील गगन में
पंख फैलाए शान्त मन से
दिल में लिए ख्वाहिशें हजार

कर लू मैं भी अपनें सपनों को साकार
धैर्य की माला के मोतियों को
अब सहजता से साहस के धागें में पिरोता हूँ

आसमान की चोटी को छूने के लिए
एक बार तेजी से उड़ान भरता हूँ

कल्पना रूपी इस गगन में
मन रूपी परिंदे को
सारे सपने पूरा करने के लिए खुला छोड़ता हूँ
और फिर से यही कहता हूँ
थोड़ा मैं भी उड़ना चाहता हूँ।।

तेज भरनी है मुझे रफ्तार
ताकि बादलों को चीरतें हुए कर दू मैं पार
ना बंधन हो कोई जो लगाए लगाम
उड़ू मैं ऐसे बनके तूफान
चीरता हुआ हर बाधा को
पा लू बस मैं भी अपना मुकाम

उड़ने की राह में
मैं अपना पहला कदम रखता हूँ
अपने सपनों को पूरा होता देख
अब मैं भी थोड़ा-थोड़ा उड़ता हूँ।।

****

साधु बाबा की सीख

जे.पी.हाण्डा
समन्वयक

एक राजा ने बेटे को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया लेकिन राज्य के ज्यादातर लोगों को एक चिंता सता रही थी। युवराज अभी 18 साल के भी नहीं हुए थे, वह कैसे राज्य को नियंत्रित करेंगे। एक साधु बाबा जब युवराज को बधाई देने पहुंचे, तो उन्होंने पहले तो युवराज को ढेरों आर्शीवाद दिए, फिर अपनी पोटली में से तीन गुडियां निकाली और युवराज को भेंट कर दीं। युवराज साधु बाबा पर भड़क गए और बोले, क्या मैं आपको बच्चा दिखाई देता हूं। साधु बाबा मुस्कुराकर बोले, युवराज हर कोई चिंतित है कि आप राज्य का संचालन ठीक से कर पाएंगे या नहीं। इन गुडियों के माध्यम से में सिर्फ आपकी मदद करना चाहता हूं। साधु बोले, इन तीनों गुडियों के कानों में एक छेद दिख रहा होगा आपको। इस छेद में रस्सी डालकर देखिए तो जरा, क्या होता है। युवराज ने पहली गुडिया के कान में रस्सी डाली, तो वह दूसरे कान से निकल आई। फिर युवराज ने दूसरी गुडिया के कान में रस्सी डाली और वह उसके मुंह से निकल आई। साधु बोले, यह उन लोगों की तरह है जो कुछ भी सुनते ही तुरंत बोल देते हैं, बिना यह सोचे कि वह सही भी है या नहीं। अब युवराज ने तीसरी गुड़िया के कान में रस्सी डाली तो वह अंदर ही रह गई, लेकिन कहीं से निकली नहीं। साधु बोले, यह उन लोगों की तरह है जो सुनते-समझते तो सब कुछ हैं, पर शांत रहते हैं। युवराज बोले, लेकिन इससे मुझे क्या करना? साधु बोले, एक अच्छा संचालक, एक अच्छा राजा वही होता है जो यह बात समझ सके कि उसे कब, क्या बोलना है, सब कुछ नहीं बोलना है और कब सिर्फ सुनना है। युवराज ने साधु से आर्शीवाद लिया और उनको आश्वस्त किया कि वह ऐसा ही करेंगें।

****

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

- डॉ. अमरनाथ झा

मसालों के इन फायदों के बारे में जानते हैं आप

मसालों का सेवन तो पूरे विश्व में किया जाता है, लेकिन हमारे देश में मसालेदार भोजन को कुछ ज्यादा ही चाव से खाया जाता है। मसाले एक ओर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं तो दूसरी ओर इनकी अधिक मात्रा हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए मसालों के फायदे-नुकसान जानना भी जरूरी है।

धनिया पाउडर

हमारे खाने में सजावट और फ्लेवर के लिए इस्तेमाल होने वाला धनिया, पाउडर के रूप में पाचक क्रिया को तेज करने में सहायता करता है। आयुर्वेद में पेट से संबंधित गड़बड़ियों को दूर करने में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसका सेवन रक्त में शुगर के स्तर को नियंत्रित रखता है। धनिया शरीर में वसा के अवशोषण को प्रभावित कर कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रण में रखता है। यह हार्मोन्स के संतुलन के लिए भी बढ़िया है।

दालचीनी

दालचीनी में एंटीऑक्सीडेंट्स किसी भी अन्य मसाले से कहीं ज्यादा होते हैं। यह सूजन, रक्त में शुगर लेवल और ट्राय ग्लिसराइड्स को कम करती है। दालचीनी में मैग्नेशियम, आयरन और कैल्शियम जैसे मिनरल्स भी अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। कई अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि दालचीनी फास्टिंग ब्लड शुगर को 10-29 प्रतिशत तक कम कर देती है। इसमें एंटी माइक्रोबियल गुण होते हैं, जिससे यह भोजन को जल्दी सड़ने से बचाती है।

सौंफ

सौंफ खाने में तो डाली ही जाती है, इसे खाने के बाद खाना पचाने के लिए भी खाया जाता है। यह पोषक तत्वों से भरपूर होती है। इसमें कॉपर, पोटैशियम, कैल्शियम, जिंक, मैग्नेशियम, आयरन, सेलेनियम, मैग्नीज और विटामिन सी अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। फूड साइंस जर्नल में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार खाना खाने के बाद सौंफ चबाने से रक्तदाब को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है।

इसमें पाए जाने वाले फाइटोन्युट्रिएंट्स साइनस को साफ करने में सहायता करते हैं और ब्रोंकाइटिस, छाती की जकड़न और खांसी में आराम पहुंचाते हैं। यह शरीर को डिटॉक्स करती है और हानिकारक तत्वों से शरीर को लड़ने में मदद करती है। यही कारण है कि नियमित रूप से इसका सेवन करने वालों को त्वचा, पेट और स्तन कैंसर की आशंका कम होती है।

जीरा

जीरा एक लैक्सेटिव की तरह काम करता है और बवासीर की समस्या को कम करता है। जीरा एक अच्छा पाचक है। यह मैग्नेशियम और आयरन का अच्छा स्रोत है, कैल्शियम के अवशोषण में सहायता करता है और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करता है। साथ ही लिवर को विषैले पदार्थों से मुक्त भी रखता है।

अदरक

अदरक एक प्राकृतिक दर्द निवारक के रूप में काम करती है। अदरक भोजन के पाचन में सहायता कर, पेट की गड़बड़ियों को दूर करता है। अदरक में एंटी ऑक्सीडेंट गुण भी होते हैं, और यह कैंसर जैसी बीमारियों को रोकने में भी सहायक हो सकता है।

लहसुन

लहसुन हमारे खाने में प्राकृतिक एंटीबायोटिक की तरह काम करता है। यह रक्तदाब और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, लहसुन खाने वालों को हृदय रोगों और कैंसर का खतरा कम हो जाता है। अमेरिका में हुए एक अध्ययन में यह भी सामने आया है कि लहसुन रक्तदाब को कम करने वाली दवाइयों जितना प्रभावशाली होता है। लहसुन का पूरा फायदा लेने के लिए इसकी कलियों को कुचलना या बारीक-बारीक काटना चाहिए, क्योंकि एलिसिन केवल तब ही बनता है, जब लहसुन के अंदर पायी जाने वाली कोशिकाओं को काटा या कुचला जाता है।

मेथीदाना

मेथीदानों के सेवन से पाचन दुरुस्त रहता है और यह रक्त में कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। मेथी शरीर की आंतरिक तथा बाहरी सूजन में आराम पहुंचाती है। स्तनपान कराने वाली महिलाओं में यह मिल्क फ्लो को बढ़ाती है। मेथीदाने में पाया जाने वाला प्लांट प्रोटीन 4-हाइड्रोक्सीआइसोल्युसिने होता है, जो इंसुलिन की कार्यप्रणाली को सुधार कर, रक्त में शुगर के स्तर को नियंत्रित रखता है। डायबिटीज में रोज आधा कप मेथीदाने का पानी पीने से रक्त में शुगर का स्तर नियंत्रित रहता है।

सरसों के बीज (राई)

राई में विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स काफी मात्रा में पाया जाता है। इसका सेवन रूमैटाइड ऑर्थराइटिस और मांसपेशियों के दर्द में आराम पहुंचाता है और अस्थमा के लक्षणों को नियंत्रित करता है। सरसों के बीज कैंसर से लड़ने में सहायक होते हैं। इनका सेवन फेफड़ों, आहार नाल में कैंसर की आशंका को काफी कम करता है।

हल्दी

हल्दी हमारे भोजन का अनिवार्य अंग है। इसमें पाया जाने वाला कुरकुमिन एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होता है, जो वातावरण के हानिकारक तत्वों से लड़कर कई बीमारियों और उम्र बढ़ने के प्रभाव को कम करता है। हल्दी सूजन में एक दवा के समान कार्य करती है और जोड़ों के दर्द में आराम पहुंचाती है। शोध बताते हैं कि हल्दी अल्जाइमर्स के खतरे को कम करती है।

मिर्च (लाल और हरी)

मिर्च मेटाबॉलिज्म को 50 प्रतिशत तक बढ़ाकर पाचन क्रिया बेहतर करती है। मिर्च रक्त नलिकाओं को स्वस्थ्य रखने में सहायक है। हरी मिर्च में एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो हानिकारक तत्वों से शरीर की रक्षा करते हैं। इसके विटामिन ए, बी और सी रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं। इसे संतुलित मात्रा में लेना चाहिए।

और भी कई लाभ हैं मसालों के

चीन में हुए एक शोध के अनुसार जो लोग सप्ताह में दो या अधिक बार मसालेदार भोजन का सेवन करते हैं, उनकी असमय मृत्यु होने का खतरा लगभग 10 प्रतिशत तक कम हो जाता है। इसी तरह कनाडा में हुए एक शोध के अनुसार 2 ग्राम अदरक के रस का नियमित सेवन आंतों के कैंसर का खतरा कम करता है।

मसालों के कई और फायदे भी हैं

- मसाले कैलरी की खपत तेज कर वजन कम करने में सहायक होते हैं।
- ये मेटाबॉलिज्म को तेज करते हैं, जिससे भोजन का पाचन अच्छा होता है।
- छाती की जकड़न को कम करते हैं।
- ये इम्यून तंत्र को बेहतर कर सर्दी-जुकाम से लड़ने में सहायता करते हैं।
- मसालों का सेवन पाचक एंजाइम्स को बढ़ाता है।
- सर्दियों में रक्त नलिकाएं थोड़ी सिकुड़ जाती हैं, मसालों का सेवन इन्हें सामान्य करने में सहायता करता है।
- मसालेदार भोजन मूड अच्छा करने वाले हार्मोन्स एंडोरफिन और सेरोटोनिन का स्तर बढ़ाता है।

ज्यादा न खाएं मसाले

थोड़ी मात्रा में मसालों का सेवन जरूरी है, लेकिन अधिक मात्रा में मसाले खाने से पेट में अम्ल की मात्रा बढ़ जाती है, जो अल्सर का कारण बन जाती है। इसके अलावा मसाले अधिक खाने से और भी कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं-

- नियमित रूप से तेज मसालेदार खाना खाने से स्वाद कलियों को नुकसान पहुंचता है, इससे आगे चलकर स्वाद को पहचानने में समस्या हो सकती है।
- अधिक मात्रा में मसालों का सेवन पेट की अंदरूनी पर्त को क्षतिग्रस्त कर सकता है, जिससे गैस्ट्राइटिस, स्टमक अल्सर और आंतों से संबंधित कोलाइटिस जैसी समस्याएं भी हो सकती है।
- अधिक मसालेदार भोजन से हार्ट बर्न और एसिड रिफ्लेक्स की समस्या हो सकती है।
- गर्मियों में मसालों का सेवन कम करें।

******

लोगों ने कई कोशिशें की मुझे मिट्टी में दबाने की लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि "मैं बीज हूं" आदत है मेरी बार-बार उग आने की।

गलत अंग्रेजी

संकलन : बेस्ट ऑफ हुल्लड मुरादाबादी

एक दिन हमारी श्रीमती को बैठे बैठाए
अंग्रेजी सीखने का शौक चरराया
उन्होंने हमें बुलाया और फरमाया
हमें एक मास्टरनी लगवा दो
हमें भी अंग्रेजी में गिटपिट करना सिखा दो
थोडे दिनों के बाद एक खूबसूरत मिस
उनको पढ़ाने लगी
उनसे ज्यादा हमें भाने लगी
अंग्रेजी सीखने के पहले ही दिन
हमसे बोली, ''सुनते हो
शर्माजी का ट्रांसफर (Transfer) हो गया
विदाई दे आओ''
हमने कहा, ''गलत अंग्रेजी बोलकर
हमारा दिमाग मत खाओ''
दूसरे दिन बोली, ''क्रिकेट की डौकुमैंट्री सुनी
ये इंडिया वाले एक ईवनिंग से हारेंगे''
तीसरे दिन उनकी मिस ने पूछा,
''अंग्रेजी के सैनटैंस लिख लिए?''
पत्नी बोली, ''वो तो सुबह ही लिख लिए थे
अब आप करप्शन कर लीजिए''
चौथे दिन, उनकी सहेली का टेलीफोन आया
हमारी श्रीमती ने उठाया, सहेली ने पूछा
''सुना है तुम्हारे पड़ोस में
गुप्ताजी गुजर गए''
पत्नी बोली, ''अजीब सस्पैंस हो गया
सुबह तक तो सैंस में था
शाम को नौनसैंस हो गया''
पांचवे दिन, सुबह ही सुबह बोली,
''ठंडा कोल्ड ड्रिंक पिएंगे?''
मैंने कहा, ''नहीं सिगरेट पिऊंगा
दीयासलाई ले आओ''
वो बोली, कुछ तो सीखो, एटीऐट
बच्चों पर बुरा असर पड़ता है
घर में डौंट ड्रिंक सिगरेट''
छठे दिन मैं रात को जरा देर से लौटा
तो वो कंबल ओढे पड़ी थीं
मैंने पूछा, ''क्या तबीयत खराब है?''
वो बोली, '' माई हैड इज ईटिंग सर्कल्स''
लेकिन आप इतनी रात तक कहां थे
मैंने कहा, ''एक दोस्त को देखने
आपरेशन थिएटर गया था''
वो बोली, ''यह बंबई भी बड़ा
स्टेंजोपुअर शहर है, यहां रोज
नए-नए थिएटर खुल जाते हैं''
मैं घर में बैठी-बैठी मक्खियां
किल करती रहती हूं और आप 'फ्रेंडों' के साथ
फिल्म देखने जाते हैं,
सातवें दिन, मैं उन्हें मायके पहुंचाने के लिए
स्टेशन पर लाया
बंबई से दिल्ली जाने वाली गाडी में अपने
साथ बिठाया, अचानक बडौदा के आस-पास
श्रीमती को जोर की छींक आई,
एक पडोसी महिला चिल्लाई,
''आर यू सफरिंग फ्राम कोल्ड?''
पत्नी ने कहा, ''नहीं, आई एम सफरिंग फ्रोम
बॉम्बे।''

******

वाप्कोस

भूलना अर्थात् मेमरी लॉस

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

यादें तो याद आती हैं पर परेशानी तब होती है जब साधारण सी बात भी याद नहीं आती और यह हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन जाती हैं। हमें पता ही नहीं चलता कि ये मेमरी या याददाश्त से जुड़ी कोई समस्या है और हम इसे नजरअंदाज कर देते हैं। हम जानते हैं कि अधिकतर उम्र बढ़ने पर ही होती है परन्तु आजकल देखने में आ रहा है कि इस समस्या का आगाज छोटी उम्र के लोगों पर भी हो रहा है।

याददाश्त में कमी आना या भूलना इसके मुख्य कारण हैं : मल्टीपल टास्किंग अर्थात् एक साथ कई तरह के काम करना, नींद की कमी, खान-पान का गलत होना, विटामिन की कमी, एक साथ कई काम करना या दिमाग में चलते रहना, डिप्रेशन, दिमागी चोट, नशा व बढ़ती उम्र और अल्जाईमर्स। दिमाग को सेहतमंद रखने के लिए जरूरी है सोना क्योंकि सोने से दिमाग में कई कैमिकल्स का स्त्राव होता है जो हमारे दिमाग के टिश्यू को रिलेक्स करता है और उठने पर काम के लिए तैयार रखता है।

आज का दौर वैश्विक ग्लोबल का दौर है। हर कोई दूसरे से बेहतर करना या बनना चाहता है जिसके कारण अधिकतर व्यक्ति मल्टीपल टास्किंग अर्थात् एक साथ कई काम कर रहे हैं जिसका प्रभाव उनके शरीर के साथ-साथ उनके दिमाग पर अधिक पड़ रहा है और इस तनाव के कारण वे शार्ट-टर्म-मेमरी लॉस यानि तुरंत की बातों को भूलने की बीमारी से ग्रस्त हो रहे हैं। बार-बार चीजें भूलना, किसी का नाम व नम्बर याद करने में बहुत मुश्किल होना, अक्सर नल, गैस, प्रेस, पंखा आदि बंद न करना, जरूरी काम याद न रहना, अहम तारीख का याद न रहना, कोई वस्तु या कागजात रख कर भूल जाना कि कहां रखे हैं जैसी कई चीजें है जो व्यक्ति की भूलने की बीमारी के लक्षण के संकेत देते हैं। परन्तु हम इससे बेखबर रहते हैं।

ऐसे लक्षण दिखते ही निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दें ताकि यह बीमारी न हो :-

1. सर्वप्रथम 7-8 घंटे की नींद अवश्य लें जो शरीर को आगे काम करने के लिए सेहतमंद रखे।
2. प्रतिदिन कम से कम ½ घंटा कसरत, योग, एरोबिक्स अवश्य करें।
3. यदि एक साथ कई काम करने की मजबूरी हो तो संबंधित कार्य लिखते जाएं और कार्य करते समय उन्हें अवश्य पढ़ते रहें।
4. एक समय में एक ही काम करें, पहला काम खत्म करने के बाद ही दूसरा काम शुरू करें।

5. अगर अधिक काम सीट पर बैठकर करने का है तो बीच-बीच में उठकर थोडी चहल कदमी करें तथा लंबी-लंबी सांस लें।
6. काम करते समय अपने दिमाग को एक ही जगह स्थिर रखें।
7. सोने से थोड़े समय पहले, मोबाइल, टी.वी., कम्प्यूटर आदि का प्रयोग न करें अर्थात बंद कर दें।

याददाश्त अथवा मेमरी तेज करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं :-

1. 10-12 बादाम एक बड़ा चम्मच देसी घी में भूनकर पीस लें और गुनगुने दूध में मिलाकर सांय में लें।
2. तुलसी के पत्तों को चाय या दूध में मिला कर भी पीना फायदेमंद होता है।
3. रात में 5-7 बादाम पानी में भिगोकर सुबह उसका छिलका उतार कर खाने से भी फायदा होता है।
4. 200 मि.ली. दूध में एक छोटा चम्मच हल्दी डालकर भी प्रयोग किया जा सकता है।
5. प्रतिदिन एक चम्मच आंवले के पाउडर का सेवन करना भी फायदेमंद होता है।
6. किसी भी रोग में आसन काफी उपयोगी होते हैं। इस रोग में बकासन, पद्मासन, पादहस्तासन, सर्वांगासन, हलासन, पश्चिमोत्तासन व सुखासन काफी उपयोगी हैं। इन आसनों को करने से मानसिक संतुलन व ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढती है। यह दिमाग को रिलैकस व मासपेशियों के तनाव को कम करता है। दिमाग में खून का दौरा बढ़ता है और ज्यादा आक्सीजन मिलती है। नींद अच्छी आती है और सिरदर्द में आराम मिलता है। नर्वस सिस्टम को रिलैक्स करने के साथ-साथ तनाव व थकावट को खत्म करता है, ध्यान बढ़ाता है। शरीर और दिमाग को रिलैक्स करने के लिए अच्छा और आसान उपाय है।
7. अपने परिवार, इष्ट-मित्रों से मेलजोल बढाएं उनसे खुलकर बात करें। अपने मनपसंद का कोई भी काम सप्ताह में एक बार अवश्य करें। कुछ समय पार्क व प्रकृति के पास गुजारें। ऐसा करने से मन और दिमाग को ताजगी और शांति मिलती है।

भूलने की बीमारी सीधे-सीधे दिमाग से जुड़ी होती है। दिमाग हमारे शरीर का एक बहुत छोटा हिस्सा है परन्तु इसे काम अत्याधिक करना पड़ता है। अत: हमारा दिमाग दुरूस्त रहेगा तो शरीर भी सेहतमंद रहेगा। इसलिए हमें अपने दिमाग को सक्रिय और तेज बनाने के लिए उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना होगा ताकि हमारा दिमाग सक्रिय और सेहतमंद बन सके। जिससे हमारा शरीर स्वास्थ्य और ऊर्जावान बना रहे और जीवन आनंदमय, स्फूर्ति से भरा हुआ, सकारात्मकर रूप में व्यतीत हो।

******

हार की जीत
सुदर्शन

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद् - भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे "सुल्तान" कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे - से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा," उन्हें ऐसी भ्रान्ति सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ - दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते - होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, "खडगसिंह, क्या हाल है?"

खडगसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"

"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की - सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?"

दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु-वेग से उडने लगा। उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की तरह मिथ्या समझने लगे। संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज आई, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।"

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे - धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "जरा ठहर जाओ।"

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।" खड़गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन - दुखियों पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात्, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों से मुँह न मोड़ेगा।"

******

आइए अपना ज्ञान परखें

संकलन : भारतीय संस्कृति प्रश्नोत्तरी

1. धर्म-कर्म और यज्ञादि के नियमों को समझने के लिए जो ग्रंथ लिखे गए उन्हें क्या कहते हैं?

   (क) वेद (ख) कल्पसूत्र

   (ग) उपनिषद (ग) आरण्यक

2. जिन पुस्तकों में यज्ञों की वेदियां बनाने के नियम बताए गए हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

   (क) ब्राह्मण ग्रंथ (ख) उपनिषद

   (ग) शुल्बसूत्र (ग) आरण्यक

3. निम्नलिखित में कौन सा काव्य ग्रंथ श्रीहर्ष द्वारा रचित नहीं है?

   (क) विजयप्रशस्ति (ख) नैषधीय चरित

   (ग) दशरूपकम (ग) शिवशक्ति सिद्धि

4. निम्नलिखित में कौन सा काव्य ग्रंथ आदि शंकराचार्य द्वारा रचित नहीं है?

   (क) भजगोविंदम (ख) विवेक चूडामणि

   (ग) पंचीकरणम (ग) चंडीशतक

5. निम्नलिखित में कौन सा काव्य ग्रंथ पंडितराज जगन्नाथ द्वारा कृत नहीं है?

   (क) गंगालहरी (ख) सौन्दर्यलहरी

   (ग) करूणालहरी (ग) अमृतलहरी

6. 'पंचतंत्र' नामक प्राचीन कथा ग्रंथ किसके द्वारा लिखा गया?

   (क) नारायण पंडित (ख) विष्णु शर्मा

   (ग) कालिदास (ग) अश्वघोष

7. प्राचीन कथा ग्रंथ 'हितोपदेश' किसके द्वारा लिखित है?

   (क) विष्णु शर्मा (ख) नारायण पंडित

   (ग) बाणभट्ट (ग) दंडी

8. 'मुद्राराक्षस' नामक प्रसिद्ध नाट्य ग्रंथ किसने लिखा है?

   (क) विशाखदत्त (ख) श्रीहर्ष

   (ग) कालिदास (ग) अश्वघोष

9. 'महावीरचरित' एवं 'मालती माधव' नामक नाट्य ग्रंथ किस नाटककार द्वारा रचित है?

(क) कालिदास (ख) भवभूति

(ग) भास (ग) भारवि

10. निम्नलिखित में से कौन सा नाट्य ग्रंथ जयदेव द्वारा रचित है?

(क) रत्नावली (ख) कर्पूरमंजरी

(ग) प्रसन्नराघव (ग) कुंदमाला

11. 'अष्टांगसंग्रह', 'अष्टांगहृदय', 'मध्यमसंहिता' एवं 'रसरत्नसमुच्चय' नामक आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रंथ किसके द्वारा रचित हैं?

(क) भावप्रकाश (ख) चरक

(ग) सुश्रुत (ग) वाग्भट्ट

12. 'भावप्रकाश निघंटु' नामक आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रंथ के लेखक कौन हैं?

(क) चरक (ख) वाग्भट्ट

(ग) भाव मिश्र (ग) सुश्रुत

13. 'स्वप्नवासवदत्त' एवं 'प्रतिज्ञा यौगंधरायण' नाट्य ग्रंथों के रचयिता कौन हैं?

(क) भास (ख) कालिदास

(ग) भवभूति (ग) जयदेव

14. सुप्रसिद्ध संगीत ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' के रचयिता कौन हैं?

(क) तानसेन (ख) सारंगदेव

(ग) सोमनाथ (ग) गोविंद दीक्षित

15. संगीत ग्रंथ 'रागविबोध' के रचयिता का नाम बताएं?

(क) गोविंद दीक्षित (ख) सारंगदेव

(ग) सोमनाथ (ग) तानसेन

16. महाभारत ग्रंथ की रचना किस छंद में हुई है?

(क) अनुष्टुप (ख) भुजंगप्रयात

(ग) रोला (ग) हरिगीतिका

17. प्रख्यात संगीत ग्रंथ 'संगीत सुधा' के रचनाकार कौन हैं?

(क) सारंगदेव (ख) सोमनाथ

(ग) तानसेन (ग) गोविंद दीक्षित

18. हमारे राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में है?

(क) गीतांजलि (ख) गोदान

(ग) आनंद मठ (ग) देवदास

19. गुरूमुखी लिपि किस भाषा की है?

(क) सिंधी (ख) पंजाबी

(ग) डोगरी (ग) कन्नड़

20. निम्नलिखित में से कौन सा ज्योतिष ग्रंथ वराहमिहिर द्वारा रचित है?

(क) वेदांगज्योतिष (ख) पंचसिद्धांतिका

(ग) सिद्धांत शिरोमणि (ग) आर्यभटीय

21. 'सिद्धांत शिरोमणि' नामक ज्योतिष ग्रंथ किसके द्वारा रचित है?

(क) आर्यभट (ख) ब्रह्मगुप्त

(ग) भस्कराचार्य (ग) वराहमिहिर

22. 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' एवं खंड खाद्यक' नामक ज्योतिष ग्रंथों के लेखक कौन हैं?

(क) वराहमिहिर (ख) आर्यभट

(ग) भास्कराचार्य (ग) ब्रह्मगुप्त

23. प्रख्यात ज्योतिषाचार्य आर्यभट द्वारा लिखित ग्रंथ निम्नलिखित में से कौन हैं

(क) ब्रह्मस्फुट सिद्धांत (ख) आर्यभटीय

(ग) सिद्वांत शिरोमणि (ग) पंचसिद्धांतिका

24. श्रीधराचार्य, महावीर, श्रीपति एवं ब्रह्मगुप्त किस विषय के आचार्य थे?

(क) खगोल (ख) ज्योतिष

(ग) गणित (ग) दर्शन

25. 'कथासरित्सागर' किसने लिखा है?

(क) हाल सातवाहन (ख) सेनापति

(ग) कृपाराम (ग) सोमदेव

उत्तर के लिए कृपया पृष्ठ संख्या 25 देखें।

****

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन

वाप्कोस में सतर्कता अनुभाग समय-समय पर निवारक सतर्कता निरीक्षण करता रहा है और विभिन्न विभागों का औचक निरीक्षण भी करता रहा है, वाप्कोस में अनुपालन हेतु नियमित रूप से सतर्कता रोकथाम के सभी पहलुओं को मजबूत करने के उपायों के सम्बन्ध में समय-समय पर केन्द्रीय सतर्कता आयोग, सार्वजानिक उद्यम विभाग और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से प्राप्त मानकों और दिशानिर्देशों को जारी करता रहा है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार जहाँ भी आवश्यक हो अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय जांच ब्यूरो और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय को नियमित रूप से आवधिक रिटर्न प्रस्तुत की जा रही हैं तथा जांच उचित तरीके से एवं तुरंत की जाती हैं। इसके अलावा, समय-समय पर औचक निरीक्षण किए जाते हैं तथा निरंतर सतर्कता रखी जाती है।

वर्ष 2018-2019 के दौरान, सतर्कता जागरूकता सप्ताह 29 अक्टूबर, 2018 से 3 नवम्बर, 2018 तक मनाया गया था। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान जागरूकता कार्यक्रम के

माध्यम से कर्मचारियों के उच्च नैतिक मानक को बनाए रखने के प्रयास किए गए । कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह के साथ "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" शुरू हुआ। "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के दौरान वाप्कोस के सभी कार्यालय परिसरों में सतर्कता जागरूकता से संबंधित बैनर और पोस्टर प्रदर्शित किए गए थे। वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय परिसर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान, वाप्कोस के कर्मचारियों के 6 से 9 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए "जल बचाओ/वृक्ष बचाओ" पर एक चित्रकला प्रतियोगिता और 10 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए "भ्रष्टाचार के प्रभाव" पर एक लेखन प्रतियोगिता और वाप्कोस के कर्मचारियों के लिए "भ्रष्टाचार मिटाओ-नया भारत बनाओ" विषय पर एक निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिंदी और अंग्रेजी दोनों में) आयोजित की गई थी, जिसमें कर्मचारियों और उनके बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया था।

उपरोक्त गतिविधियों के अतिरिक्त, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की ओर से वाप्कोस द्वारा 30 अक्टूबर, 2018 को स्कोप ऑडिटोरियम, स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली में **"भ्रष्टाचार मिटाओ-नया भारत बनाओ"** पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वाप्कोस सहित जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय और इसके नियंत्रणाधीन वाप्कोस सहित अन्य सभी कार्यालयों से कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

****

आपके पत्र

भारत डायनामिक्स लिमिटेड
BHARAT DYNAMICS LIMITED
भारत सरकार का उद्यम
Govt. of India Enterprise
रक्षा मंत्रालय
Ministry of Defence
कंचनबाग, हैदराबाद - 500 058. टि.एस. भारत.
Kanchanbagh, Hyderabad - 500 058. T.S. INDIA
CIN : U24292TG1970GOI001353

हैदराबाद
दि: 28/02/2019.

सेवा में,

श्रीमती निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक,
'वाप्कोस दर्पण', वाप्कोस लिमिटेड,
नयी दिल्ली - 11000।

महोदया,

आपके कार्यालय की त्रैमासिक पत्रिका **"वाप्कोस दर्पण"** का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। सबसे पहले 50वें स्थापना दिवस समारोह की हार्दिक बधाई। पत्रिका के माध्यम से इस समारोह की कुछ झलकियाँ देखने को मिली, तकनीकी, सामान्य व राजभाषा विषयक लेख पठनीय हैं। यथास्थान प्रस्तुत प्रसंग व उद्धरण प्रेरक हैं। कुल मिलाकर सुंदर, चित्र व सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिए बधाई।

भवदीय,

2/8/2019

(सोमनिधि शर्मा)
उप महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा. - राजभाषा) एवं
सचिव, न रा का स (उ)
भारत डायनामिक्स लिमिटेड

टेलिफोन Tel. :
फैक्स Fax :
ईमेल E-mail :
वैबसाईट Website : http://bdl.ap.nic.in

सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते

– रामधारी सिंह दिनकर

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग-निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पांव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुन बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय
पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in

श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.), वाप्कोस लिमिटेड और श्री पंकज मल्होत्रा, कार्यकारी निदेशक (वित्त), सेन्ट्रल इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.), वाप्कोस लिमिटेड चौथे इण्डिया-ईयू वाटर फोरम में जल संसाधन व अवस्थापना के क्षेत्रों में वाप्कोस की गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए।

नराकास गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा दिनांक 07.12.2018 को "लघु चित्र कहानी" प्रतियोगिता का आयोजन